द्वितीय अध्याय

• महाभोज • उपन्यास में राजनीतिक समस्याएँ —

`महाभोज` उपन्यास में राजनीतिक समस्याएँ --

`महाभोज` उपन्यास राजनीतिक परिस्थितियों पर आधारित उपन्यास है। इसमें सभी स्तरों पर छा रहे राजनीतिक भ्रष्टाचार, आतंक और अत्याचार का वर्णन ही मुख्य रूप से किया गया है। आज के समूचे विश्व की राजनीति ही भ्रटाचार, आतंक, अत्याचार और हर प्रकार के पारस्पारिक अविश्वास का अखाडा बन चुकी है। महाभोज उपन्यास भारत की जनतंत्री राजनीति, उससे सम्बन्धित लोगों और समस्याओं को सामने रखकर लिखा गया है। अत:` महाभोज` में भारतीय राजनीति की जिन ज्वलन्त समस्याओं का चित्रण किया गया है उन्हें निम्नलिखित उपशीर्षकों में रेखांकित किया जा सकता है --

(१) भारतीय राजनीति एवं गांधीवाद और सांस्कृतिक मूल्य।
(२) राजनीति एवं राष्ट्रनिष्ठा का ढोंग।
(३) राजनीति एवं कंफन खसोट गिद्ध।
(४) राजनीति एवं स्वार्थांध नेता।
(५) राजनीति एवं गुंडागर्दी।
(६) राजनीति एवं आम जनता।
(७) राजनीति एवं नौकरशाही।
(८) राजनीति एवं नारेबाजी।
(९) राजनीति एवं चुनावी दाँवपेच।
(१०) राजनीति एवं चापलुसी।
(११) राजनीति एवं अंधविश्वास के शिकार नेता।
(१२) राजनीति एवं शासन सत्ता।
(१३) राजनीति एवं विरोधी दल।
(१४) राजनीति एवं सत्तापरिवर्तन : आशा - निराशा।
(१५) राजनीति एवं प्रचार माध्यम।
(१६) महाभोज एवं समकालीन राजनीति।

उपर्युक्त समस्याओं को देखने से पहले हम साहित्य और समाज के पारस्पारिक सम्बन्ध को देखते हैं ।

साहित्य और समाज - पारस्पारिक संबंध --

साहित्य समाज का दर्पण है --

साहित्य और समाज के पारस्पारिक संबंध को स्पष्ट करता हुआ एक सूत्र वाक्य बहुत दिनों से प्रचलित है कि 'साहित्य समाज का दर्पण है ।' अर्थात साहित्य उस दर्पण के समान है जिसमें हमारा सम्पूर्ण सामाजिक जीवन प्रतिबिम्बित होता है । साहित्य का स्रष्टा सामाजिक प्राणि होता है । वह समाज में रहकर जो कुछ सीखता, देखता और अनुभव करता है, उसी को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त कर देता है । इसलिए साहित्य में जो कुछ भी कहा जाता है,वह समाज से ही सम्बन्धित रहता है । हमारी जो मूल प्रेरणाएँ हमारे जीवन का संचालन और विकास करती हैं, वे ही साहित्य - सृजन की प्रेरणा देती हैं ।

साहित्यकार शून्य में रचना नहीं कर सकता । वस्तुत: साहित्य और समाज संबंध अनादिकाल से चला आ रहा है । वाल्मीकी ने अपनी रामायन में एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था का चित्रण कर अपने दृष्टिकोण के अनुसार समाज के विविध पक्षों को सम्मुख रखा और यह बताने का प्रयास कि किस मार्ग पर चलकर मानव सुख और संतोष का अनुभव कर सकता है । तुलसी ने अपने रामचरित्र में युगीन परिस्थितियों को एवं उनके अनुरूप निर्मित आदर्श को प्रस्तुत किया । उन्होंने राम-परिवार रामराज्य को प्रस्तुत करके तत्कालीन हिन्दू समाज को एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं सामर्थ्यवान अवलंबन प्रदान किया । हिन्दी साहित्य का इतिहास तो वस्तुत: समाज का ही दर्पण है । आदिकाल,भक्तिकाल,रीतिकाल और आधुनिक काल में अपनी-अपनी समसामायिक परिस्थितियों को उजागर करने की चेष्टा तत्कालिन कवियोंने की है ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है इतना ही नहीं वह समाज का नियामक होता है । वह हमारे अमूर्त भावों को मूर्तरूप प्रदान करता है और विचारों का परिष्कार करता है । साहित्य हमारी अंतर्निहीत शक्ति को जागृत करके उसे कार्यरत

करता है । साहित्य अपनी प्रेरक शक्ति के कारण राष्ट्र का गौरव बन जाता है । शेक्सपीअर और मिल्टन पर इंग्लैंड को गर्व है । कालिदास और तुलसी पर भारत को गर्व है । इनका साहित्य समाज को संस्कृति और राष्ट्रीयता के सूत्र बाँधने में समर्थ है । साहित्य के दर्पण में धर्म,दर्शन आदि से सम्बन्धित मान्यताएँ भी प्रतिबिंबित होती है । प्रत्येक समाज की रहन-सहन,चिंतन और उसके आचार-विचार का एक ढंग होता है । साहित्य में उन सबका चित्रण होता है,और अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण साहित्य समाज का प्रतिबिंब बन जाता है ।

साहित्य और सामाजिक उन्नयन --

साहित्यकार समाज की बिखरी शक्तियों को एक स्थान पर इकट्ठा करता है । साहित्य के अंतर्गत हम जीवन की विविधताओं को समग्र रूप में देखने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं । इसे हम युग-बोध कह सकते हैं । साहित्य में युग-बोध की अभिव्यक्ति प्राय: तीन रूपो में --

(१) समाज का यथार्थवादी चित्रण

(२) समाज का सुधारणात्मक चित्रण

(३) समाज के प्रसंगों का क्रान्ति प्रेरक चित्रण ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि साहित्यकार ही समाज की उन्नति और सामाजिक विकास की आधारशीला प्रस्तुत करता है । संसार के समस्त क्रांतिकारी एवं महत्वपूर्ण परिवर्तनों के मूल में साहित्यकारों के महत्वपूर्ण विचार रहे हैं । इतना ही नहीं साहित्य मानव जीवन में सुख और शांति की भावना का उद्‌गाता है । कबीर,तुलसी आदि संत कवियों की रचनाएँ मनुष्य को सुख और शांति प्रदान करती है । प्रेमचंद प्रसाद आदि साहित्यकारों से भारत के यथार्थ का और इतिहास का प्रभावशाली चित्रण हमारे सामने आ जाता है । इसमें कोई संदेह नहीं की सामाजिक उन्नयन में साहित्य का योग सर्वोपरि और सर्व प्रमुख है । साहित्य अभ्यंतरजीवन-द्‌वारा निरंतर रस ग्रहण करता है और उसको संजीवनी-शक्ति प्रदान करता है । साहित्य का प्रभाव समाज पर स्थायी और व्यापक रूप में पडता है ।

अंग्रेजी चले गये लेकिन अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव उनके शिष्टाचार, विचार, कला, सौन्दर्यानुभूति, आदर्श, जीवनमूल्य सभी कुछ हमारे मन पर आज भी गहरा प्रभाव डालते हैं। जीवन एक अक्षुण्ण धारा है। साहित्य उसकी प्राणदायिनी एवं रमणीय बूंदों का अक्षय मंजर है। साहित्यकार देश-काल की सीमाओं से ऊपर उठकर इन शृंखलाओं से मधुसंचय करके सार्वभौम एवं सार्वकालीन सत्य का उद्घाटन करता है। साहित्य में केवल वही नहीं होता है जो जीवन और समाज में घटित होता है, उसमें बहुत कुछ वह भी होता है जो जीवन में घटित हो सकता है, साहित्य केवल मानव और उसकी उपलब्धियोंका ही वर्णन नहीं करता वह मानव की संभावनाओं की परिकल्पना भी करता है। इसी को हम आदर्श और यथार्थ का सामंजस्य कहते हैं। साहित्य जीवन की अपूर्णताओं को पूर्ण करता है। वस्तुत: वह आत्मसाक्षात्कार का महत्वपूर्ण साधन है। वह समाज की समस्याओं का चित्रण का महत्वपूर्ण साधन है। वह समाज की समस्याओं का चित्रण करता है और साथ-साथ उन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। साहित्य व्यक्तिगत वाग-विलास का माध्यम न होकर मानव - समाज के उन्नयन की साधना है। सत्साहित्य में सामाजिक यथार्थ जीवनगत मूल्य और कल्पनागत आदर्श तीनों का समन्वय रहता है। सामाजिक धर्म है कि वह जीवन सत्य को प्रकट करने वाली शिवत्वमयी साहित्यिक रचनाओं का सहृदयतापूर्वक अनुशीलन करे। साहित्य से समाज की और समाज से साहित्य की शोभा है। दोनों मिलकर मानव की जय-यात्रा का स्मारक स्तंभ स्थापित करते हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य और समाज का परस्पर अभिन्न और गहरा सम्बन्ध रहता है। जैसे कि समाज में जो घटित होता है वह साहित्य में चित्रित किया जाता है, उसी प्रकार राजनीति भी समाज से अभिन्न होने के कारण हर प्रकार की राजनीतिक उथल-पुतल साहित्य का विषय बन जाती है। अत: प्रस्तुत अध्याय में राजनीति के विविध अंगों का अवलोकन करेंगे।

(१) <u>भारतीय राजनीति एवं गांधीवाद और सांस्कृतिक मूल्य --</u>

भारतीय राजनीति एवं गांधीवाद पर विचार करने से पहले हम गांधीवाद

पर विचार करने से पहले हम गांधीवाद के बारे में जानकारी लेंगे ।

गांधीवाद -

गांधीजी अपने सिद्धान्त के संदर्भ में किसी वाद-विवाद को कोई स्थान नहीं देना चाहते थे । गांधी दर्शन व्यक्ति तथा समाज के हित का वह दर्शन है जिसके प्रथम प्रयोग कर्ता स्वयं गांधीजी थे ।

गांधीवाद को पाँच भागों में विभक्त किया जाता है --

(१) वर्ण व्यवस्था
(२) ट्रस्टीशिप
(३) विकेन्द्रकरण
(४) हृदयपरिवर्तन
(५) सत्याग्रह ।

(१) वर्ण व्यवस्था --

मानवतावाद को आधार मानकर गांधीजी ने `रामराज्य` और `सर्वोदय` के विचारों का समर्थन किया । `सत्य और अहिंसा` को उन्होंने सभी सामाजिक कुरीतियों को नष्ट करने का साधन माना । इन साधनों के द्वारा वर्ग विग्रह नष्ट होगा । सत्य,अहिंसा,आत्मशुध्दि,अपरिग्रह,स्वदेशी,आदि के सिद्धान्तो को व्यावहारिक रूप प्रदान कर गांधीजी ने पूँजी एवं श्रम के बीच निरंतर बढती जानेवाली दूरी में सामिप्य स्थापित करना चाहा ।

(२) ट्रस्टीशिप --

ट्रस्टी शब्द के लिए संस्कृत में `न्यास` शब्द का इस्तेमाल किया जाता है । जिसका अर्थ `धरोहर` है । इसका वास्तविक अर्थ यह है कि व्यक्ति संपत्ति का संग्रह न करे केवल उसका रसिक रहे और उसे समाज के कल्याण के लिए व्यय करता रहे । स्ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त गांधीजी व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही स्तरों पर

समान रूप से लागू करना चाहते थे। सूक्ष्म और स्थूल पदार्थ, बुद्धि चातुर्य, कार्यक्षमता सभी का व्यक्ति को स्वामी नहीं ट्रस्टीमात्र समझना चाहिए। यही गांधीजी का विचार था। गांधीजी की यह इच्छा थी कि हर व्यक्ति अपरिग्रहद्वारा शारीरिक श्रम और संपत्ति का ट्रस्टी के रूप में प्रयोग करें तो `रामराज्य` की कल्पना साकार हो सकती है।

(३) विकेन्द्रीकरण --

मिल एवं कलकारखानों के कारण व्यवसायों के केन्द्रित हो जाने की दशा में मनुष्य को बड़े नगरों में ही रहना पड़ता है और घनी आबादी के कारण स्वास्थ हानि भी होती है। विकेन्द्रीकरण गांधीजी इसी लिए चाहते थे कि समाज में समानता आ जाए। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ भोजन, वस्त्र और निवास विकेन्द्रीकरण के द्वारा ही पूर्ण हो सकती हैं।

(४) हृदयपरिवर्तन --

गांधीजी प्रतिपक्षी पर प्रभाव हिंसा अथवा बल प्रयोग द्वारा नहीं वरन् हृदय परिवर्तन द्वारा डालना चाहते थे। `अहिंसा` के द्वारा यह हृदयपरिवर्तन वह सहज साध्य है ऐसा मानते थें। इतना ही नहीं अहिंसा को वह एक पवित्र वस्तु मानते थे। जो बहुत बड़ी शक्ति है ऐसा उनका विश्वास था। हृदयपरिवर्तन के सिद्धान्तों की व्यावहारिक बनाने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी प्रेम शक्ति का और आत्मशक्ति का विकास करें तथा अपने विरोधी के लिए भी प्रेम भाव रखे।

(५) सत्याग्रह --

गांधीजी सत्याग्रह को अपने विचार दर्शन का एक अभिन्न अंग मानते थे, साथ ही सत्य को मानकर किसी वस्तु के लिए आग्रह करना या सत्य और अहिंसा से उत्पन्न होने वाला बल ऐसा भी गांधीजी मानते थे। गांधीजी सत्याग्रह को प्रेम-शक्ति अथवा आत्मशक्ति के पर्याय के रूप में स्वीकार करते थे। सच्चे ध्येय की

अहिंसात्मक नीतिद्वारा किया गया प्रयत्न सत्याग्रह की संज्ञा पाने का अधिकारी है। गांधीजी सत्याग्रह को सत्य के लिए तपस्या मानते थे।

माना जाता है कि भारतीय राजनीति गांधीजी के तत्वों के आधार पर चलती है। सत्य,अहिंसा,सदाचार,राष्ट्रनिष्ठा की शपथ नेता लोगों से ली जाती है। नेता लोग खादी का इस्तेमाल करते हैं। खादी के वस्त्र पहनते हैं। गांधीजी को राष्ट्रपिता मानते हैं। लेकिन आज भारतीय राजनीति में गांधीजी के तत्वों का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग किया जा रहा है। गांधीवाद को उपयोग में लाकर उससे अधिक से अधिक फायदा उठाने में राजनीतिक नेता लगे हुए हैं। जहाँ तक सांस्कृतिक मूल्यों का सवाल है। नेता लोग ऐसा करना चाहिए,वैसा करना चाहिए ऐसी बातें भाषण में लोगों से कहते हैं। अपने धर्म,संस्कृति के बारे में लोगों से कहते हैं। गीता, बायबल,कुराण, ग्रंथगुरूसाहब में कहे हुए मार्ग पर चलने के लिए लोगों से कहते हैं। और वे खुद इन मार्गों पर चलने का नाटक करते हैं। लेकिन यह लोगों के सामने खेला हुआ एक झूठा नाटक होता है, वास्तव जीवन में वे दोहरी जिन्दगी बिताते नजर आते हैं।

` महाभोज ` में दा साहब का जो चरित्र-चित्रण लेखिका ने किया है वह आज के राजनीतिक नेता लोगों के चरित्र पर प्रकाश डालता है। जो अपने स्वार्थ के लिए गांधीजी के तत्वों का उपयोग करते हैं। और जनता को भी गांधीजी के तत्वों के आधार पर चलने के लिए कहते है लेकिन यह उनका जनता के साथ खेला हुआ नाटक होता है। उनकी कथनी और करनी में जमीन आसमान का फर्क होता हैं। ये नेता लोग दोहरे व्यक्तित्व वाले होते हैं। दा साहब भी ऐसे ही एक नेता है। उनका बाह्य व्यक्तित्व आज के चुस्त-चालाक समर्थ और आत्मविश्वासी राजनीतिज्ञों का प्रतिनिधित्व करने वाला है। चुस्त-चालाक राजनीतिज्ञों के समान ही इन्होंने अपने घरेलू वातावरण को सादगी के साचे में ढाल रखा है। मन्नु भण्डारी जी ने महाभोज में इस संदर्भ में कहा है -- उनका निजी कमरा भी बहुत ही सादा है। तडक-भडक, तामझाम कहीं कुछ भी नहीं। यह सादगी उनके पद के अनुरूप कतई नहीं, पर उनके व्यक्तित्व के अनुरूप जरूर है। कमरे में कालीन नहीं,मोटी दरी है,जिसके एक सिरे

पर दीवार से सटा मोटा-सा गद्दा बिछा है। ऊपर झाकझाक चादर और गाव-तकिये पड़े हैं। एकदम देशी पध्दति। दा साहब को जितना देश प्रिय है,उतनी ही देशी पध्दति भी।" [१]

दा साहब गाँधीवादी हैं। उन्होंने अपने घर में सजावट के लिए गांधी और नेहरू की तस्वीर ही टांग रखी है। इन्हें वे अपना पथ-प्रदर्शक मानते हैं। गाँधीजी की हर बात, हर आदर्श को लेकर चलना चाहते हैं। त्याग के रास्ते पर चलना चाहते हैं। इस लिए दा साहब ने गांधीजी के आदर्श,त्याग को गाँठ बाँधकर अपने पास रखा है। इस संदर्भ में मन्नू मण्डारीजी ने कहा है कि ' बापू यों ही इतने बड़े देश को अपने साथ त्याग के रास्ते पर चलाकर नहीं ले गये थे ... पहले खुद चले थे उस रास्ते पर।' आस्था से कहीं बात और आस्था से किया काम दूसरे तक न पहुँचे,यह हो ही नहीं सकता। नहीं पहुँचता है तो समझो कहीं तुम्हारी अपनी आस्था में कमी है।" बापू की हर बात, हर आदर्श को गाँठ बाँधकर रखा है दा साहब ने।"[२] गाँधी के समान दा साहब गीता को भी अपना पथ-प्रदर्शक मानते हैं। इस संदर्भ में मन्नू मण्डारीजी ने कहा है कि " गीता का उपदेश उनके जीवन का मूल-मन्त्र है। घर के हर कोने में गीता की एक प्रति मिल जायेगी। वैसे वे कभी किसी को उपहार देते नहीं - व्यर्थ के ढकोसलों में कतई विश्वास नहीं है उनका। पर फिर भी कभी उपहार देना ही पड़ गया तो सदा गीता की प्रति ही दी है।"[३] गीता के इतने बड़े भक्त हैं दा साहब। उनके लिए राजनीति धर्मनीति से कम नहीं है। वे किसी के विवेक-अविवेक पर टिप्पणी नहीं करते। फल पर दृष्टि न रखते हुए वे निष्ठा से अपना कर्तव्य करते रहते हैं। लेकिन उनका यह बाह्य व्यक्तित्व है। उनकी कथनी और करनी में फर्क होता है। मुँह में राम और बगल में छूरी जैसी उनकी वृत्ति दिखाई देती है। दा साहब की यह वृत्ति आज के समस्त स्वार्थी राजनीतिक नेता लोगों का प्रतिनिधित्व करती है।

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१४।
२ - वही - -,,- पृ.४१।
३ - तदैव - ,, पृ.१४।

गाँधीवादी विचारधारा निर्धन, शोषित और दीन-हीन जनता को ही केन्द्र मानकर विकसित हुई है और नेहरू भी यथासाध्य उसी विचार को सामने रखते हैं। लेकिन उनके विचार-सिद्धान्त आज प्राय: निरर्थक और अप्रासंगिक हो गये हैं, और उनके नाम से अधिक से अधिक लाभ उठाने की मनोवृत्ति शेष है।

आज राजनीतिक नेता लोग जानबूझकर गाँधीजी के विचारों को भूल गए हैं। गाँधी जयंती के दिन जयंती मनाते हैं और भाषण देते हैं। नेता लोग उनके भजन करते हैं, खादी वस्त्रों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन दूसरे दिन उन्हें भूल जाते हैं। उनके तत्वों को भूल जाते हैं। खादी वस्त्र पहनकर ,बकरी का दूध पीकर,या सत्याग्रह,हड़ताल करने से या गाँधी टोपी पहनने से गांधीजी के तत्वोंका स्वीकार नहीं होता हैं। गाँधीजी धर्मनिरपेक्ष थे। गाँधीजी ने कभी विरोधी लोगों पर हाथ नहीं उठाया था। सहिष्णुता,अहिंसा,सत्य के मार्ग पर वे चलते थे। आज धर्म निरपेक्षाता का रूप ढोंगी ,दिखाऊ हो गया है। वोटों के लिए मंदिर या मसजिद का इस्तेमाल किया जा रहा हैं। राम और रहीम दो भाईयों को धर्म के नाम पर लड़ाया जा रहा है। कल के सच्चे दोस्त सांप्रदायिकता के कारण एक - दूसरे को मारने पर तुले हुए हैं। कल का एक नेक इन्सान आज पशु की तरह व्यवहार कर रहा है। नेता लोगों की स्वार्थी वृत्ति,सत्ता की कुर्सी के लालच के कारण आज अयोध्या जैसा प्रश्न ,राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है।

अत: हम कह सकते हैं कि भारतीय राजनीति सत्ता की राजनीति बन गयी है। राजनीतिक नेता गाँधीवादी विचारधारा को अपनाने का ढोंग कर रहे हैं ,और जान बूझकर गांधीवादी विचारों को भूल गए हैं। भारतीय संस्कृति और परंपरा को भूल कर लोगों की धार्मिक भावनाओं का अपने स्वार्थ के लिए गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। राष्ट्रीय एकात्मता,रखने के बदले उसमें बाधा डालने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस सत्य से आज कोई भी अपरिचित नहीं है।

२) राजनीति एवं राष्ट्रनिष्ठा का ढोंग --

राजनीतिक लोग अपने स्वार्थ के लिए राष्ट्रनिष्ठा का ढोंग करते हैं। नेता लोग चुनाव में अपने स्वार्थ के लिए खड़े होते हैं। लोगों की सेवा करने का मौका वे

जनता की तरफ से माँगते हैं । लेकिन वह एक उनका नाटक होता है । कुर्सी पर बैठकर जनता के पैसों पर वे ऐशोआराम की जिंदगी जीते हैं । उन्हें अपने हीत की चिंता लगी रहती है जनता के हीत की नहीं । चुनाव जीतने के बाद वे कुर्सी पर बैठते हैं तो उन्हें जनता की परवाह नहीं होती । आज की राजनीति में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है कि स्वार्थवश पार्टी को भी महत्त्व दिया जाता है । अपने स्वार्थ के लिए पार्टी या दल के पीछे ये लोग इतने पागल हो जाते हैं कि इन्हें राष्ट्र या समाज हीत की बिलकुल चिंता नहीं होती । जिस कार्य के हेतु पार्टी की निर्मिती हो चुकी है, जिनके लिये हो चुकी हैं वे सारी बातें गौण हो जाती हैं और पार्टी हीत ही महत्त्वपूर्ण हो जाता है, इस संदर्भ में मन्नूजी ने लिखा है --

" जानते हो,इस समय तुम लोगों के आपसी मतभेद उभरकर सामने आये था कि मन्त्रिमंडल गिराया जाये तो सरोहा-चुनाव पर क्या असर पडेगा उसका ? बात केवल एक सीट की नहीं ... सुकुल बाबू के आने की है । उनकी जीत हमारी नालायकी का डंका-पीट ऐलान होगा कि नहीं ? पार्टी के लिए अच्छा होगा यह,या उसके हीत में होगा ?" [१]

किसी एक व्यक्ति के जीतकर आने से पार्टी को कितना खतरा साबित हो सकता है इसे नेता लोग अपनी पार्टी के लोगों को समझाते है --

" सुकुल बाबू का आना पूरी पार्टी के लिए खतरनाक साबित हो सकता है, इसे मत भूलो ।" [२]

राजनीतिक नेता लोग बडे ढोंगी होते हैं । कभी पार्टी की एकता की बात कहते हैं तो कभी किसी एक व्यक्ति के चुनाव जीतने से पार्टी को कितनी हानी पहुँचती है ये अपने लोगों को समझाते हैं और अपने मकसद तक पहुँचने में कामयाब होते हैं । दा साहब जैसे नेता इत्यारे जोरावर को राजनीतिक संरक्षण देते हैं । और अपने स्वार्थवश जोरावर को जमाने के साथ बदलने के लिए कहते हैं । दा साहब जोरावर को समझा रहे हैं ।"

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.५९ ।

२ तदैव महाभोज - पृ.६० ।

" जमाना बदल रहा है जोरावर, जमाने के साथ बदलना सीखो । जो चीजें आज से तीस साल पहले होनी चाहिए थी - वे आज भी पूरी तरह नहीं हो रहीं । दुर्भाग्य है इस देश का यह ।" [१]

अपने चुनावी स्वार्थ के लिए दा साहब जोरावर को ये उपदेश दे रहे हैं, वरना उन्हें देश के बारे में, देश हीत के बारे में, सोचने की फुर्सत ही कहाँ मिलती । ऐसे नेता राष्ट्रनिष्ठा का ढोंग करके चुनाव जीतने की कोशिश करते हैं । कभी-कभी दा साहब जैसे नेता अपने स्वार्थवश ' लखन ' जैसे आदमी की विधानसभा चुनाव में टिकट देते हैं । जिसकी 'लियाकत पार्टी दफ्तर में कुर्सियाँ उठाने बिछाने की होती है । लेकिन उनके विचार से लोगों में दिनों दिन पद की लोलुपता बढ रही है । और ऐसी ही स्थिति रही तो देश का क्या होगा ? इसलिए उनका मन क्षुब्ध हुआ है और वे सोच रहे हैं कि ;

" लोगों में दिनों-दिन बढती यह पद-लोलुपता कहाँ ले जाकर पटकेगी देश को ? काम करने को कोई तैयार नहीं पर पद के लिए सभी उत्सुक-उतावले ।" [२]
यहाँ इन लोगों की ढोंगी राष्ट्रनिष्ठा दिखाई देती है ।

राजनीति में अहंभाव बहुत बढ गया है । कोई भी त्याग करने को तैयार नहीं है । पहले लोगों में होने वाली निष्ठाएँ आज लगभग लुप्तप्राय हो गयी है । पुरानी पीढी और आज की पीढी में कितना अन्तर है यही आपा साहब बता रहे हैं --

" हमारी पीढी ने तो केवल त्याग करना ही जाना था - आकांक्षा-अपेक्षा तो कुछ रही ही नहीं कभी । और आज की पीढी त्याग करेंगे कन-मन और बदले में चाहेंगे धन-मन ।" [३]

इस तरह राजनीति में त्याग करने को कोई तैयार नहीं है । राजनीति में त्यागी नेता की अपेक्षा ढोंगी नेताओं की संख्या बढ गई है । राजनीति में हर मनुष्य

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१६१ ।
२ तदैव ,, पृ.१५ ।
३ तदैव ,, पृ.५६ ।

को चाहिए कि वह बड़े ही सोच समझकर अपने नपेतुले कदम रखे। उसे हरदम अपने सामर्थ्य और क्षमता का ध्यान रखना चाहिए। आज राजनीति इतनी सोखलीबन चुकी है कि इसमें किसी भी प्रकार का कोई उच्चादर्श नहीं है और न ही इसमें कोई ठोस मूल्य हैं। आज के राजनीतिक नेता दुमुहा चरित्र का जीवन यापन करते हैं। हवा के रुख की तरफ मुँह मोड़ लेते हैं। राजनीति स्वार्थनीति बन गयी है। राष्ट्रहीत की अपेक्षा स्वहीत और पार्टीहीत दिखाई देता है। समाज में आतंक छाया हुआ है, बेकारी और बेरोजगारी की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। भाषावाद, सांप्रदायिकता, पंथवाद, सीमावाद, प्रांतवाद जैसे वाद निर्माण हो चुके हैं। सामान्य जनता का जीना मुश्किल हो गया है। गुन्डे और गुनहगार खुले आम घुमते नजर आते हैं। पूरा समाज अस्थिर हो चुका है। समाज के हत्यारें सत्ता की कुर्सी हथियाने में कामयाब हो गए है। भ्रष्टाचार और गैरव्यवहार करनेवाले लोगों के काले कारनामों का बाजार गर्म हो गया हैं। कोई भी समाज के हीत की ओर, भलाई की ओर नहीं देखता है। सब अपने और अपने लोगों की भलाई में लगे हुए हैं। राष्ट्रहित, समाजहित को भूलकर राजनीतिक लोग अपनी, खुद की जिन्दगी अपने मतानुसार जी रहे हैं। लोक मंगल राज की अपेक्षा गुंडाराज कर रहें हैं। सच्चे, सेवाभावी नेताओं की अपेक्षा ढोंगी नेताओं की संख्या बढ रही है।

३) राजनीति एवं कफन खसोट गिद्ध --

राजनीति में कफन खसोट गिद्धों की कमी नहीं है। हर दिन अपना माल-माव बढाने वाले गिद्धों ने सत्ता की कुर्सियाँ अपने पास रखी हैं। जो जहाँ है वहीं रहने का कोई नाम नहीं लेता है। राजनीति में यह देखा जाता है कि नेता लोग अत्यंत लोभी एवं लालची होते हैं। आदर्श और ईमानदारी जनता की सेवा करने के सिद्धातों की अपेक्षा इन नेता लोगों की कफन खसोटी वृत्ति ही दिखाई देती है। महाभोज में ऐसे ही एक नेता कफन खसोट गिद्ध हैं सुकुल बाबू। सुकुल बाबू दस वर्ष तक मुख्यमन्त्री रह चुके हैं। भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुकुल बाबू ने पीछले चुनाव में हारने के बाद एलान किया था कि चुनाव नहीं लड़ेंगे और सक्रिय राजनीति से सन्यास लेंगे। सुकुल बाबू अपने जीवन के बचे हुए दिनों में जनता की सेवा करना चाहते थे।

लेकिन बिसू की मौत हुअी और उनकी थाली में सुनहरा मौका परसकर आ गया। विधान सभा की एक सीट के लिए होने वाले उप-चुनाव में सुकुल बाबू खडे हो गये। वे सत्ता की कुर्सी के लोभ से लोगों की कहीं हुअी बाते भूल गये। क्योंकि उनके मतानुसार जनता की सेवा पद पर बैठकर ही की जाती है।"

" पद से उतरने के तुरन्त बाद ही उन्होंने यह महसूस किया कि जनता की सच्ची सेवा उच्च पद पर बैठकर ही की जा सकती है।" [१]

यह कभी नहीं हो सकता कि, राजनीतिक नेता सत्ता से बचे रहे। सुकुल बाबू जैसे कफन खसोटी नेता तो कभी नहीं। इसलिए बिसू को मौत का मोहरा बनाकर वे चुनाव जीतना चाहते हैं। सिर्फ चुनाव जीतकर बैठना ही नहीं बल्कि चुनाव जीतकर अपना मंत्रीमंडल तक बनाना चाहते हैं। ये उनकी कफन खसोटी वृत्ति दिखाई देती है।

सुकुल बाबू की तरह दा साहब एक ऐसे कफन खसोट गिद्ध हैं, जो अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। विधान सभा उप-चुनाव में उन्होंने अपने आदमी को टिकट दिया है। जिसका नाम है लखनसिंह। जिसकी लियाकत पार्टी-दफ्तर में कुर्सियाँ उठाने-बिछाने तक की ही है। लेकिन दा साहब, अपना आदमी होने के कारण लखन को टिकट देते हैं। और चुनाव जीतने के लिए प्रचार सभाओं में भी जाते हैं। सुकुल बाबू की तरह दा साहब भी बिसू की मौत का राजतीतिक लाभ उठाते हैं। चुनाव के कारण बिसू की मौत एक महत्वपूर्ण घटना बन गयी है। दा साहब के आश्रय में पला जोरावर बिसू की हत्या करता है। लेकिन दा साहब आगजनी और बिसू की हत्या जैसी घटनाओं में जोरावर भयंकर अपराधी होते हुए भी उसे कानुनी सहायता करते हैं। जोरावर को डी.आई.जी.सिन्हा की अदालत बाईज्जत बरी करती है। अपने स्वार्थ के लिए अन्याय और अत्याचार करने वालों को दा साहब संरक्षण देते हैं और बिन्दा जैसे नेक इन्सान को जेल में बंद किया जाता है।

---

१ मण्डारी - मन्नू - महाभोज -- पृ.१२।

अपने राजकीय लाभ के लिए दा साहब दत्ता बाबू जो की मशाल के संपादक हैं उन्हें बुलाकर समझाते हैं । कागज का डबल कोटा देकर, विज्ञापन देकर उनके अखबार में अपना स्तुतीगान करने को कहते हैं । डी.आई.जी.सिन्हा जैसा पुलिस अफसर भी प्रमोशन के लिए छटपटा रहा है । दा साहब की कफन खसोटी वृत्ति का उदाहरण है --

' स्वभाव है आदमी का । जो जहाँ है, वहाँ से सन्तुष्टि नहीं । और चाहिए ... और चाहिए ।...।'[१] भ्रष्टाचारी सिन्हा जैसा अफसर भी प्रमोशन के लोभ से अपना ईमान तक बेचता है । दत्ता बाबू जैसा संपादक अपने स्वार्थ के लोभ से दा साहब की हाँ-में हाँ मिलाता है । जोरावर जैसा गुंडा दा साहब का राजकीय आश्रय का हकदार होते हुए भी चुनाव में खड़ा रहने की इच्छा व्यक्त करता है । दा साहब उसे सक्सेना की फाइल का भय दिखाकर चुनाव लड़ने से परावृत्त करते हैं । ईमानदार एस.पी.सक्सेना को निलंबित किया जाता है । पूरे उपन्यास में दा साहब का चरित्र एक स्वार्थी, कफन खसोटी, धूर्त, जनता को मूर्ख बनाने वाला कामयाब नेता के रूप में हमारे सामने आता है । अत: दा साहब एक ऐसे कफन खसोट गिद्ध के रूप में सामने आते हैं जो कि अपना तथा अपनों का ही हीत करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं ।

ऐसे ही गिद्धों के रूप में स्वास्थ मंत्री राव, विकास मंत्री चौधरी, मेहता, हमारे सामने आते हैं । ये नेता अपना माल-भाव हररोज बढाते हैं । अपने स्वार्थ के लिए लोग दा-साहब के मंत्रीमंडल से त्याग-पत्र देना चाहते हैं और लोचन भैया से हाथ मिलवते हैं । लेकिन लोचन भैया के आदर्शवादी सिद्धान्त और अपनी कफन खसोटी वृत्ति के कारण फिर दा साहब से मिलते हैं । राव को शिक्षामंत्री का पद मिलता है । भावी पीढी का निर्माण करने की चुनौती दा साहब राव को देते हैं । लेकिन राव का ध्यान भावी पीढी के बदले अपने पर टिका हुआ है । यहीं उसकी कफन खसोटी वृत्ति दिखाई देती है ।---

---

१ भण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.२३ ।

` भावी पीढी का निर्माण करने की दिशा में राव का कोई विशेष उत्साह नहीं । उसका ध्यान तो अपनी पीढी पर भी नहीं,केवल अपने पर टिका हुआ है ।' १

इस तरह राजनीति में कफन खसोट गिद्धों की कमी नहीं है । चाहे दा साहब हो या सुकुल बाबू,राव हो या चौधरी । ये गिद्धों की ऐसी जाति है जो अपने तथा अपनों के हित के लिए,अपनी कफन खसोटी वृत्ति के कारण पूरे समाज को, आम जनता को,एक लावारिस लाश की तरह नोच-नोच कर खा जाना चाहते हैं ।

(४) राजनीति एवं स्वार्थांध नेता --

राजनीति में कोई आदर्श नेता नहीं रह गया है । अहिंसा या गांधीवाद के तत्व वे भाषण में ही अपनाते हैं । इन स्वार्थी नेताओं की नीति मुँह में राम और बगल में छुरी-सी होती है । राजनीतिक नेता बनो और मनमानी करो यही इनके सिद्धान्त बन गये हैं । इनके स्वार्थ के कारण गरीब,मजदूर लोगों पर अन्याय और अत्याचार होते हैं । आम जनता का शोषण हो रहा है । पर इन नेता लोगों का आम जनता की और समाज की ओर ध्यान नहीं है । चुनाव जीतने के बाद फिर चुनाव जीतने के लिए ये लोग जनता के सामने आते हैं ।` महाभोज` में ऐसे ही एक स्वार्थी नेता दा साहब खुद तो गुंडों और बदमाशों की तरफ से अपने स्वार्थ के लिए आतंक करवाते हैं या इन लोगों की काली करतुतों को बढावा देते हैं । लेकिन चुनाव के समय ये बडे नाटकीय ढंग से लोगों को आतंक और दहशत का कैसा मुकाबला करना चाहिए ये बता रहे हैं जैसे कि --

' केवल गाँव की ही नहीं, पूरे देश की यही हालत हो गयी थी । आतंक में गले दबा रखे थे सबके... कोई भी चूँ नहीं कर सकता था । हम लोग शुरु से यही तो कोशिश कर रहे हैं कि लोग दहशत से मुक्त हों ... निडर बनें... खुलकर अपनी बात कहें । पर अभी भी जैसे लोगों में डर है सही बात कहने का साहस नहीं जुटा पाते ।' २

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१५५-५६

२ तदैव ,, पृ.७७ ।

दा साहब जैसे स्वार्थी नेता के रक्षान में पला हुआ गुंडा जोरावर बिसेसर की हत्या करवाता है। लेकिन राजनीतिक स्वार्थ के कारण ये नेता लोग जोरावर ने हत्या की है यह मालुम होते हुए भी लोगों को सही बात कहने और साक्ष जुटाने का उपदेश दे रहे हैं। यही तो राजनीतिक नेता लोगों की स्वार्थी वृत्ति होती है।

राजनीतिक नेता लोगों को किसी भी कीमत पर चुनाव जीतना होता है। ये नेता चुनाव जीतने के लिए विभिन्न प्रकार की कुटनीतियाँ अपनाते हैं। भोले-भाले लोगों को भड़काते हैं। अपने को गरीबों का हमदर्द समझने वाले नेता लोग किस तरह जनता के सामने बड़ी नाटकीयता से पेश आते हैं इस संदर्भ में मन्नू जी ने लिखा है --

" ठीक है भाई,तुमको चुनाव जीतना है .. पर लोगों की शान्ति और आपसी सद्भावना पर तो मत जीतो। होगा क्या,गाँव में पहले ही तनाव है,और बढ जायेगा। आपस में ही मार-काट मचेगी। और इस सबका परिणाम ? पिसेगा बेचारा गरीबों का तबका। सपन्न लोग तो जैसे - तैसे बच ही जाते हैं - पैसे के जोर से, ताकत के जोर से। मरना तो गरीब ही है ना?" [१]

दा साहब जैसे स्वार्थी नेता विरोधी दल पर कीचड उछालते हैं। शान्ति और सद्भावना की बाते करते हैं और खुद जोरावर जैसे गुंडे की सहाय्यता करते है। यह नेता लोगों की स्वार्थी वृत्ति दिखाई देती है चुनाव के दौरान आश्वासन देकर चुनाव जीता जाता है। कोई स्वार्थी नेता लोगों के हक की लड़ाई लड़ने के लिए खड़ा होता है तो कोई लोगों की समस्याओं को दूर करने के लिए। ' महाभोज ' में सुकुल बाबू एक ऐसे स्वार्थी नेता हैं जिन्हें चुनाव किसी भी कीमत पर जीतना है। इसलिए लोगों को वे किसलिए चुनाव लड रहे हैं यह बता रहे हैं कि ---

" खडा हुआ हूँ आप लोगों के हक की लड़ाई लड़ने के लिए। बिसू की मौत का हिसाब पूछने के लिए। बात केवल बिसू की मौत की नहीं है... यह आप सब लोगों के जिन्दा रहने का सवाल है ... अपने पूरे हक के साथ जिन्दा रहने का। यह मौत

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.४७।

कुछ हरिजनों की या एक बिसू की नहीं । आपके जिन्दा रहने के हक की मौत है । आपका यह हक जरा - से स्वार्थ के लिए गाँव के धनी किसानों के हाथ बेच दिया गया है.... और वही हक मुझे आपको वापस दिलवाना है । जुल्म ने आप लोगों के हौसले तोड दिये हैं इसलिए मैं लडूँगा आपकी यह लडाई । ... आखिरी दम तक लडूँगा ।" [१]

सुकुल बाबू लोगों के हक की बात लोगों से कह रहे हैं । लेकिन यह बात भूल गए है कि जब वे सत्तापर थे तब उनकी ही सरकार ने बिसू को चार साल जेल में बंद किया था । सत्ता पाने के लिए स्वार्थी नेता ये सब कर रहे हैं । ऐसे स्वार्थी नेता जनता के लिए कुछ नहीं करने वाले हैं । जनता ऐसे नेताओं के झूठे आश्वासनों से तंग आ गयी है । जनता ऐसी सत्ता लोलुप सरकार का विरोध करना चाहते हुए भी विरोध नहीं कर सकती क्योंकि जनता अपने विचारों से नहीं चलती । वह नेता लोगों के झूठे आश्वासनों और नाटकीयता की शिकार हो जाती है । राजनीतिक लोग अपने स्वार्थ के लिए सत्ता की कुर्सी के लिए जनता की एकता को बाधा पहुँचाते हैं । राजनीतिक नेता लोगों की स्वार्थी वृत्ति के यहाँ दिखाई देती है कि ...

" कुर्सी पर बैठना है तो जनता में फूट डालो ... कुर्सी बचानी है तो जनता में फूट डालो । जनता की एकता कुर्सी के लिए सबसे बडा खतरा है ।" [२]

अपने स्वार्थ के लिए राजनीतिक नेता कभी-कभी जनता को बाँटकर रखते हैं । इस संदर्भ में मन्नू मण्डारी जी का कहना है ---

" जनता को बाँटकर रखो कभी जात की दीवारें खींचकर, तो कभी वर्ग की दीवारें खींचकर । जनता का बँटा-बिखरापन ही तो स्वार्थी राजनेताओं की शक्ति का स्त्रोत है ।" [३]

इस तरह स्वार्थी राजनेताओं की स्वार्थान्धता दिखाई देती है । अपने स्वार्थ के लिए जनता को बाँटकर रखते हैं । जात की दीवार खडी करके यह जनता को आपस

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.३६

२ तथैव ,, पृ.७९

३ तथैव ,, पृ.४८-४८ ।

में लड़ाते हैं और अपनी कुर्सी संभालते हैं। दा साहब जैसे स्वार्थी नेता बेगुनाह बिसू की हत्या करने वाले जोरावर की सहायुयता करते हैं। कानुन की नजरों में उसे निर्दोष ठहराया जाता है। अपने स्वार्थ के लिए दा साहब बिन्दा जैसे नेक आदमी को जेल की चहार दीवारों में बंद करते हैं। मरने से पहले बिसू को चार साल की जेल काटनी पड़ती है। नेता लोग इतने स्वार्थान्ध हो गये हैं कि अपने स्वार्थ के लिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। इसका उदाहरण है बिसू की हत्या, बिन्दा की गिरफ्तारी और सक्सेना का निलंबन। अपने राजकीय स्वार्थ के लिए चुनाव के दौरान बिसू की हत्या का मामला उठाया जाता है। चुनावी स्वार्थ के लिए मुकुल बाबू हो या दा साहब दोनों भी हिरा के घर जाते हैं। हत्या का मामला आत्महत्या में परिवर्तीत होता है और अन्त में हत्या का आरोप बिन्दा पर लगाया जाता हैं। यहाँ नेता लोगों की स्वार्थान्धता सीमा पार कर देती है। जनता की भलाई की अपेक्षा बुराई और अपनी भलाई ऐसी राजनीति बन गई है। नेता लोग इतने स्वार्थान्ध बन गये हैं कि आदमी और इन्सानियत का नाता ही इन लोगों ने तोड़ दिया है। यहि हत्या हो, आगजनी हो, या किसी बेगुनाह की गिरफ्तारी हो इन लोगों के लिए साधारण बन गई है। यही राजनीतिक नेता लोगों की स्वार्थान्धता दिखाई देती है।

(५) राजनीति एवं गुंडागर्दी --

राजनीति में राजनीतिक लोग राजनीतिक फायदे के लिए अपने कुछ गुन्डे रखते हैं। राजनीति में यह बात अधिकतम मात्रा में दिखाई देती हैं। चुनाव के समय इन गुन्डों का उपयोग किया जाता है। राजनीतिक संरक्षण पाकर ये गुंडे सरेआम जुल्म करते रहते हैं। `महाभोज` में ऐसा ही एक गुंडा है `जोरावर`। दा साहब का अपना खास आदमी है। `सरोहा` में जोरावर का राज है। इन गुंडों के आतंक के कारण गाँव के लोग बिसेसर की मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं बोलते। बयान के समय भी सब चुपचाप रहते हैं। इन गुंडों का आतंक सरोहा में इतना है कि लोग पत्थर बन गये हैं। इस संदर्भ में -- मन्नू भण्डारी जी कहती हैं कि, " बिसू के

मारने का तरीका चाहे न समझ में आ रहा हो, पर मरवाने वाले का नाम शायद सबेक मन में बहुत साफ था । नाम भी कारण भी । परकेवल मन में । बयान के समय भी जबान पर कोई नहीं लाया । बिसू का बाप भी नहीं ।" [१]

राजनीति में पले,राजनीतिक संरक्षण पाने वाले गुण्डो का इतना अधिकार बढ गया है कि इन गुण्डो का पुलिस,प्रशासन कोई कुछ भी नही बिगाड सकता । सभी जानते हैं कि सरोहा के हरिजन टोला में आगजनी करने और बिसू की हत्या करवाने वाला जोरावर ही है । प्रांत के मुख्यमन्त्री दा साहब तक जानते हैं लेकिन उसका कुछ नहीं बिगाड सकते । बल्कि दा साहब जोरावर को जमाने के साथ बदलने के लिए कहते हैं,तब जोरावर जैसा गुण्डा दा साहब को जोरावरी भाषा में कहता है कि, --

" बदल रहा होगा जहाँ बदल रहा हो जमाना । हमारे रहते सरोहा में नहीं बदल सकता जमाना ।" [२]

इस तरह राजनीति में गुण्डों का कितना वर्चस्व है यह दिखाई देता है । जोरावर बिसू की हत्या करवाता है और सक्सेना की फाईल के रिपोर्ट जोरावर के खिलाफ जाते हैं । दा साहब उसे सक्सेना की फाईल के बारे में समझाते हैं क्योंकि वह चुनाव लडने के लिए प्रयत्न कर रहा है । राजनीति में ये राजनीतिक संरक्षित गुण्डे चुनाव लडने की धमकी देकर भी अपने लिए घोरतम अपराध के बाद एक पूर्ण सुरक्षा-कवच जुटा लेते हैं । दा साहब की बात मानते हैं और दा साहब का राजनीतिक संरक्षण पाने में कामयाब होते हैं । जोरावर दा साहब को उनकी जिम्मेदारी के बारेमें कहता है कि --

" आप देख लीजिये दा साहब, यह फैल-फूल का मामला हम नहीं जानते । बस,हमारे साथ ऐसा-वैसा कुछ नहीं होना चाहिए,यह आपकी जिम्मेदारी है ।" [३]

राजनीतिक फायदे के लिए अन्याय और अत्याचार करने वाले जोरावर जैसे गुण्डों को राजनीतिक संरक्षण दिया जाता है । चुनाव में ये गुंडे अपना `गुंडाराज`

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.३१-३२ ।
२ तदैव - ,, पृ.१६१ ।
३ तदैव - ,, पृ.१६२ ।

करके लोगों के वोट देने के हक को भी छिन लेते हैं। जोरावर जैसा गुण्डा समाज में अपना गुण्डाराज किस तरह करता है इस संदर्भ में भण्डारी जी कहती हैं कि,

" जोरावर के राज में वे ही वोट दे पायेंगे जिन्हें जोरावर चाहेगा।" [१]

इस तरह राजनीति में गुंडों की सहायता से चुनाव जीते जाते हैं। राजनीति गुंडागर्दी के निकट चली गई है। कोई भी आदर्श नहीं रह गये हैं। समाज में इन गुंडों के अन्याय और अत्याचार बढते जा रहे हैं। राजनीतिक स्वार्थ के लिए इन गुंडों की काली करतुतों की ओर दुर्लक्ष किया जाता है। इसके कारण ही ऐसे लोग विधान सभाओं और संसद में पहुँच जाते हैं।

(६) राजनीति एवं अन्याय की शिकार आम जनता --

राजनीतिक नेता लोगों का जानबूझकर न्याय-व्यवस्था की ओर दुर्लक्ष हुआ है। राजनीति में न्याय के बदले सामान्य जनता पर अन्याय ही रहे हैं। राजनीतिक नेता लोगों ने बडे-बडे अधिकारियों को अपने हाथ में रखा है। नेता लोगों के आदेश पर पुलिस चलती हुई दिखाई देती है। नेता लोगों ने अपने कुछ खास गुंडे पाले हुये हैं। समाज में उन गुंडों का राज चल रहा है। दिन-दहाडे गरीब लोगों के मकान आदमियों सहीत जला दिये जाते हैं। किसी बेकसुर आदमी को कुत्ते की मौत मारकर फेंका जाता है। ये सब गुनहगार कानुन की नजर में गुनहगार होते हुये भी राजनीतिक लोगों के आशीर्वाद के कारण बेकसुर छोडे जाते हैं और निरपराध लोगों को अपराधी ठहराया जाता है। 'महाभोज' में ऐसे ही एक गरीब युवक जिसका नाम है 'बिसेसर' की हत्या जोरावर जैसा गुंडा करता है। जिसके इशारे पर सरोहा के लोग चलते हैं। लेकिन जोरावर गुनहगार होते हुये भी दनदनाता फिरता रहता है। उसे किसी भी प्रकार की सजा नहीं होती।

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१७२।

सरोहा में बिसेसर की हत्या की जाँच करने के लिए सक्सेना नामक पुलिस अफसर आते हैं। सक्सेना एक ईमानदार पुलिस अफसर है। वह अपनी इच्छानुसार सारी बातों को जानकर उसकी तहतक पहुँच जाना चाहता है। इसलिए बिसेसर की घटना से सम्बन्धित तथा उसके रिश्तेदार, जान पहचान वाले सभी के बयान लेना चाहते हैं।

आज से पहले जो हुआ था उससे बिंदा अच्छी तरह परिचित है। सारे गाँववाले एवं नेता लोग यह जानते हैं कि बिसेसर की हत्या किसने की किन्तु किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं है कि वह हत्यारे का नाम अपनी जुबान पर लाये। बिन्दा के पास किसी प्रकार के प्रमाण नहीं हैं। इसलिए वह आक्रोश व्यक्त करते हुए सक्सेना साहब से कहता है कि,

" तहकीकाल क्यों कहते हैं, कहिये बेवकूफ बना रहे हैं सबको। और बिन्दा का चेहरा और बुझ सा गया। याचना भरे स्वर में उसने कहा, ' क्यों झूठमूठ गाँव वालों के साथ मजाक करते हैं ? दा साहब से लेकर आप तक की शतरंज में आज बिसू की मौत का मोहरा फिर बैठ रहा है, इसलिए इतनी जोर शोर से तहकीकात हो रही है - बड़े प्यार से बुला बुलाकर बयान लिये जा रहे हैं। पर होना जाना कुछ नहीं है। फिर एकाएक आवाज को सजग स्वर पर ले जाकर चिल्लाया, क्या हो गया है आप लोगों को ... कोई ईमान - धरम नहीं रह गया है किसी का भी .... लानत है सब पर....' " [१]

राजनीति में कोई भी ईमान-धरम नहीं रह गया है। सब अपना अपना स्वार्थ देख रहे हैं। राजनीतिक स्वार्थ के लिए किसी बेगुनाह की हत्या भी की जाती है और उसे लावारिश लाश की तरह फैंका जाता है। गुंडों और बदमाशों के खिलाफ कोई भी कानुनी कारवाई नहीं होती है। किसी एक घटना का राजनीतिक सिद्धी के लिए फायदा उठाया जा रहा हैं। न्याय व्यवस्था खोखली हुयी है और इसलिए न्याय के बदले अन्याय हो रहा है। ' थाने ? और पागलखाने में इन लोगों ने भेद नहीं रहने दिया हैं। बड़े-बड़े जुर्म इनकी नजरों में जुर्म नहीं लगते हैं। जुर्म की

---

१ भण्डारी मन्नू - पृ.१३३।

की पहचान इन लोगों को नहीं है ।

राजनीतिक लोग चुनाव के दौरान जनता के पास आते हैं । चुनाव जीतकर सत्ता की कुर्सी अपनायी जाने पर इन लोगों के काले कारनामे शुरु हो जाते हैं । इनके संरक्षित गुंडे इनके मतानुसार आम जनता को आतंकीत करने का काम करते हैं । 'महामोज' में गाँव सरोहा में हरिजन टोला जो है उसे जिन्दा आदमियों सहीत जला दिया जाता है । क्या किया था उन गरीब,निरपराध लोगों ने,क्या कसूर था उनका ? कुछ नही । जोरावर जैसा गुंडा अपना जोरावरी राज करना चाहता है । आदमी की इन्सानियत शैतानियत पर उतर आयी है । बिसू को मरने से पहले जेल काटती पडती है और गुंडों के खिलाफ लडने के कारण उसे अपनी जान से हाथ धोने पडते हैं । बिसेसर की हत्या की जाती हैं ।

राजनीतिक नेता लोग अपने मतानुसार समाज को चलने पर मजबूर करते हैं । जनता को अपने कलेजे में रखने की कोशिश करते हैं । बिसू की हत्या के बाद बयानबाजी का नाटक होता है और चुनाव तक हत्या का मामला जिंदा रखा जाता हैं । बिसू का एक आशिक दोस्त 'बिंदा' को जो निरपराध होते हुए भी इन लोगों के खिलाफ आवाज उठाने के कारण जेल में बंद किया जाता है । इमानदारी के अलावा भ्रष्टाचार को महत्व प्राप्त हुआ है । कोई अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है तो उसकी आवाज बंद की जाती है । सक्सेना जैसे इमानदार पुलिस अफसर को अनावश्यक तबादलों को झेलना पडता है और अंत में निलंबित किया जाता हैं । भ्रष्टाचारी डी.आई.जी. सिन्हा को प्रमोशन मिलता है । अन्याय को न्याय मिल रहा है राजनीति की यह न्यायनीति दिखाई देती है ।

जनता की आवाज समझी जाने वाले समाचार पत्र भी इन नेता लोगों के इशारे पर चल रहे हैं । इस कारण निरपराध लोगों पर अन्याय बढ रहे हैं । इन लोगों की तरफ से लडने के लिए कोई तैयार नहीं हैं । महामोज में दत्ता बाबू जैसे संपादक भी दा साहब को बिक चूके हैं । दा साहब के मतानुसार उनके अखबार में

समाचार छपते हैं। ` मशाल` जैसे अखबार भी नेता लोग और सत्ताधारी पक्ष की ओर झुक गए हैं।

राजनीति में यह चलता रहा है। न्याय के बदले अन्याय। अन्याय करने वाले जश्न मना रहे हैं और निरपराध जेल में सूखी रोटियाँ तोड रहे हैं। लोचन भैया जिन्हें पार्टी से निकाल दिया जाता है। सक्सेना को अपने सस्पेशन का आर्डर पढने को मिलता है और बिन्दा के आदर्शवादी सिद्धान्त उसके मन में ही रहते हैं। पुलिस की बेलों और ठोकरों की बौछार के बीच बिन्दा यही कह रहा है कि --

` मैंने बिसू को नहीं मारा... मैं बिसू को मार ही नहीं सकता। मुझे तो उसकी आखिरी इच्छा पूरी करनी है। मैं उसे पूरी करके ही रहूँगा... चाहे जैसे भी, जो भी हो।` [१]

लेकिन बिन्दा की और बिसू की भी आखिरी इच्छा पूरी नहीं होती बल्कि पुलिस वालों की और दा साहब, जोरावरो की इच्छाएँ पूरी होती हैं। बिन्दा को पुलिस वालों की मार खानी पडती है इस संदर्भ में लेखिका कहती है कि --

` आखिरी इच्छा पूरी करेगा ? ले कर.. ले कर...।` और पुलिस वालों की मार की रफ्तार और बढ जाती है। लेकिन बिन्दा का चिल्लाना बन्द नही होता। आवेश में थरथराता हुआ वह चीखता है --` मार डालो,मार डालो तुमने बिसू को मार डाला ,मुझे भी मार डालो, लेकिन देखना बिसू की इच्छा कोई नहीं मार सकता।` [२]

लेकिन बिन्दा की इन बातों का पुलिस वालों पर कोई असर नहीं पडता वे बिन्दा की ही बातें दोहराते रहते हैं और उसे मारते रहते है इस संदर्भ में भंडारी का कहना है कि ,` नहीं मार सकता.. ले देखा, और फिर बिन्दा के शरीर को रूई की तरह धुनकर वे उसे बे-दम कर देते हैं। आवेश उसका सिसकियों में बदल जाता है और गर्जना कराह में।` [३]

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१८६

२ तदैव ,, पृ.

३ तदैव ,, पृ.१८३।

इस तरह समाज में आम जनता को अन्याय और अत्याचार सहने पड़ते हैं। राजनीतिक लोगों ने अपने राजकीय स्वार्थ के लिए आम जनता पर होने वाले अन्याय की ओर जानबुझकर ध्यान नहीं दिया है। आम जनता गुंडों के हाथ का खिलौना बनकर रह गयी है। अन्याय और अत्याचार विवश होकर आम जनता को झेलना पड़ता है। बिन्दा और बिसू इन लोगों के अन्याय के शिकार हो गये हैं। सक्सेना को उसकी इमानदारी का फल मिलता है और निलंबित होना पड़ता है। इसप्रकार 'महाभोज' उपन्यास के बिसेसर की हत्या और बिन्दा की गिरफ्तारी ,अन्याय की शिकार जनता के शोषण के उदाहरण हैं।

(७) राजनीति एवं नौकरशाही --

राजनीतिक नेता लोग आज सरकारी अफसरों का उपयोग अपने नौकर की तरह कर रहे हैं। अफसरों पर राजनीतिक दबाव डाला जाता है। इसलिए आज देश की स्थिति दयनीय हो गयी है। प्रशासन और पुलिस के कार्यों में राजनीतिज्ञों की दखलअंदाजी के कारण समाज में अन्याय और अत्याचार बढे रहे हैं। राजनीतिक नेता लोगों के संरक्षित गुण्डे चाहे जो भी करे पुलिस उन्हे छू तक नहीं सकती। कोई घटना,दुर्घटना,आगजनी,बलात्कार और हत्या हो जाने पर भी पुलिस को राजनीतिक लोगों के संकेत पर मह्ज लीपा-पोती करनी पड़ती है।

राजनीतिक नेता लोग प्रशासन में अपना अधिकार जमाते हैं।सरकारी अफसरों को नौकरों को अपने मतानुसार चलने के लिए बाध्य करते हैं। वास्तव में ये सरकारी अफसर हो चाहे नौकर हो जनता के,समाज के नौकर होते हैं लेकिन नेता लोग इनका उपयोग अपने नौकर की तरह करते हैं।'महाभोज' में दा साहब डी.आई.जी.सिन्हा को जो डी.आई.जी.होते हुए भी समझा रहे हैं कि पुलिसवालों की दृष्टि बहुत निष्पक्ष और तटस्थ होनी चाहिए। अपने राजकीय स्वार्थ के लिए उन्हें किसी भी तरह बिन्दा को गिरफ्तार करवाना है इसलिए वह सिन्हा से कह रहे हैं कि --

" राजनीतिक नेता लोग डी.आई.जी.जैसे अफसर को समझाते है यह राजनीतिक नेता लोगों की वृत्ति समाज को और शासन व्यवस्था को पंगु एवं व्यर्थ

कर देती है । अपने स्वार्थ के लिए निरपराध लोगों के ऊपर अन्याय और गुनहगारों को न्याय दिया जाता है । सिन्हा जैसे अफसर को प्रमोशन का लालच दिखाकर खरीद दिया जाता है । सत्य तो यह है कि भ्रष्टाचारी सिन्हा अपना इमान बेचता है और दा साहब के मनमानी कारोबार का भागीदार बन जाता है । दा साहब के मतानुसार रिपोर्ट लिखता है । दा साहब जैसे नेता सिन्हा जैसे अफसर की सहायता से प्रशासन में मनमानी करते हैं । चुनाव जीतने के लिए न्याय का नाटक किया जाता है । उनकी कथनी और करनी में स्पष्ट करते हुए लेखिका ने लिखा है कि ,--

" आश्चर्य है,सक्सेना या आपको यह बात सूझी तक नहीं । खैर, एक बार फिर सारे मामले पर नजर डालिये खुले दिमाग और पैनी नजर से । मुझे बिसू के हत्यारे को पकडना है ... वचन दिया है मैंने गाँव वालों को और अब आप पर छोड रहा हूँ यह काम....। [१]

दा साहब की कहीं हुयी बाते डी.आई.जी.सिन्हा के समझ में आती है और इमानदार पुलिस अफसर एस.पी.सक्सेना की फाईल के पन्ने बिखर जाते है । सक्सेना चीख कर कहते हैं कि बिन्दा निरपराध है लेकिन भ्रष्टाचारी पुलिस अफसर डी.आई.जी.सिन्हा के पास पूरी रिपोर्ट तैयार है । अकाट्य तर्कों से लैस,ठोस, प्रमाणों से पुष्ट इस संदर्भ में कहा है कि ...

" बिसू के जेल से आने के पहले बिन्दा का पूरा व्यवहार एक सीधे - सरल सामान्य आदमी का व्यवहार था,पर बिसू से परिचय के बाद एक खास तरह की तुर्शी और तेजी आ गयी उसके मिजाज में । अपनी पत्नी के प्रेमी को देखकर होता ही है ऐसा । कोई बरदाश्त नहीं कर सकता । बिन्दा जैसा आदमी तो कभी नहीं ।

मरने वाले दिन बिसू ने अपना अन्तिम भोजन बिन्दा के घर किया । हीरा के बयान से यह साफ है कि शाम का खाना उसने नहीं खाया । डॉक्टरी रिपोर्ट में जिस जहर की बात है, वह दस-बारह घण्टे बाद असर करने वाला है । वह जहर इस खाने के साथ ही पहुँचा है बिसू के पेट में । खाना खिलाते ही बिन्दा ने झगडे

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१६६ । 12057 A

की बात खुद स्वीकार की । बिन्दा ने समझा लिया कि अभी जैसा माहौल है उसमें आसानी से ... ।[१]

स्वार्थी राजनेताओं को भ्रष्ट पुलिस अफसर साथ देते हैं और इस कारण बेगुनाह लोगों के उपर अन्याय होते रहते हैं । भ्रष्टाचारी नेताओं की तरह नौकर-शाही भी भ्रष्ट हो गयी है । कोई एकाद इमानदार सक्सेना जैसा नौकर होता है तो उसे निर्लज्जित किया जाता है । राजनीतिक नेताओं ने पूरी नौकरशाही को भ्रष्ट कर दिया है । सिन्हा जैसे अफसर को दा साहब समझाते है अपने राजकीय अधिकार से और सिन्हा अपने अधिकार से सक्सेना को समझाते है, क्योंकि वे दा साहब को बिक चुके हैं । बिन्दा निरपराध है कहने पर सक्सेना को सिन्हा समझा रहे है --

कि, " और आप इसी बिन्दा के साथ पार्टी बनकर आगजनी की घटना के प्रमाण जुटा रहे थे ? बिसू के हत्यारे से ध्यान हटाने के लिए वह आगजनी की बात उछाल रहा था और आप ... एक सीनियर एस.पी. होकर उसके हाथ का मोहरा बन गये ! "[२]

नौकरशाही में बडे अधिकारी अपने अधिकार का उपयोग सही ढंग से नही करते हैं । वे अपने मतानुसार अपने सहकारी अफसरों को आदेश देते है । जैसे सिन्हा ने सक्सेना को दिया था । वास्तव में सक्सेना इमानदार है और उसको रिपोर्ट सही है लेकिन सिन्हा उसे उसके अधिकार समझाते है और उसकी खिल्ली उडाते है कि आप एक एस.पी.होकर भी बिन्दा के हाथ का मोहरा बन गये ।

इस तरह राजनीतिक लोग सिन्हा जैसे अफसर का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं । कोई इमानदार अफसर हो तो दबाव का तंत्र अपनाकर उसे अपना इमान बेचने पर मजबूर किया जाता है । निरपराध बिन्दाओं को जेल में डाला जाता है । पुलिस पर पडने वाले राजनीतिक दबाव ,हस्तक्षेप के कारण ही जोरावर जैसा हत्यारा दनदनाता फिरता है । एस.पी.सक्सेना जैसे न्याय का पक्षा लेने वाले असफसर को अनावश्यक तबादलों को झेलना पडता है और अंत में अपने सस्पेंशन

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१८०-८१

२ तदैव पृ.१८१ ।

का आर्डर पढने को मिलता है । सिन्हा जैसे भ्रष्ट अधिकारी प्रमोशन के महाभोज उडाते है । इस प्रकार राजनीति में सरकारी अफसरों के कार्यपद्धति में राजकीय हस्तक्षेप के कारण सारी व्यवस्था को व्यर्थ एवं पंगु कर रखा है,इस सत्य से आज कोई भी अपरिचित नहीं हैं ।

८) राजनीति एवं नारेबाजी --

राजनीतिक नेता लोग जब चुनाव में खडे होते हैं तब बडे जोर-शोर से प्रचार करने लगते हैं । इन प्रचार सभाओं का मुख्य उद्देश्य होता है चुनाव जीतना । लोगों को झूठे आश्वासन देकर बडे जोरो से भाषणाबाजी करके ये नेता अपना और अपने पक्ष का प्रचार करते हैं । राजनीतिक नेता लोग चुनाव जीतने के लिए विभिन्न प्रकार की कुटनितियाँ अपनाते हैं । उन्हे किसी भी किमत पर चुनाव जीतना होता है । इसलिए वह अपने को हरिजनों के हमदर्द समझाते हैं । दुख का मौका हो तो उसका राजकीय फायदा उठाते हैं ।` महाभोज` में सुकुल बाबू हरिजन लोगों को अपना जीने का हक है । जुल्म ने आप लोगों के हौसले तोड दिये है, इसलिए मैं आपकी यह लडाई आखिरी दम तक लडूँगा इस प्रकार समझा रहे हैं । भोले-भाले लोगों को इन स्वार्थी नेताओं की कही हुई बाते सच लगती है और वे इन नेताओं की हाँ-में हाँ मिलाते हैं । उनका जयजयकार करने लगते हैं । इन नेता लोगों के हो अपने लोग नारे लगाते हैं और वोट प्राप्त करने में मदद करते हैं । सुकुल बाबू भाषण देते समय लोग नारे लगाते हैं कि , --

` सुकुल बाबू जिन्दाबाद... हरिजनों के हमदर्द,जिन्दाबाद ।` [१]

अपने लोगों से नारे लगाकर ये लोग अपने को गरीबों का,हरिजनों का हमदर्द समझाते है । बिसू की मौत को जिन्दा रखने का भरसक प्रयत्न कर लोगों के मन में अपना नाम बिठाने और उनके वोट हासील करने के लिए सुकुल बाबू प्रयत्न कर रहे हैं । वे लोगों के सामने तैश के भाषण दे रहे हैं और सत्ताधारी पक्ष पर किचड उछल रहे हैं । अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लडना चाहते हैं तब सभा में बैठे हुए लोग नारे लगाने शुरु करते है कि ...

---

१ मण्टारी मन्नू - महाभोज - पृ.३५ ।

" और धाँधली - नहीं चलेगी, नहीं चलेगी
सुकुल बाबू - जिन्दाबाद ।" [१]

इस तरह वे नारे लगाकर चुनाव जीतने की कोशिश करते रहते हैं । कोई सत्ताधारी पक्ष का नेता भाषण देने आया तो उस का विरोध किया जाता है । सभा में अपने लोग भिजवाये जाते है और उन नेता लोगों के विरुद्ध नारे लगाये जाते हैं । `महाभोज` में दा साहब शरोहा में भाषण दे रहे है । बिसू के मौत से उन्हे भी सदमा पहुँचा है । इसलिए वह बिसेसर की हत्या की छानबिन फिर से किसी बडे अफसर को भिजवाकर करना चाहते हैं और लोगों को ठिक से बयान देने को कहते हैं। लेकिन इन आश्वासनों से कुछ फायदा नहीं होगा और दा साहब जो चाहेंगे वहीं होगा इसलिए काली झंडी वाले लोग नारे लगा रहे हैं कि ....

" झूठे आश्वासन नहीं चाहिए ....
नही चाहिए । बिसू की मौत का जवाब चाहिए ।" [२]

लेकिन इन नारों की आवाज कोई नहीं सुनता और दा साहब के अपने लोग दा साहब की बातों में आते हैं और नारे लगाने शुरु करते हैं कि , ...

" दा साहब जिन्दाबाद` के नारों से सारा माहौल गूँज उठा ।" [३]

राजनीतिक नेता लोग इन नारेबाजी से अपना फायदा उठाने की कोशिश में लगे रहते हैं । उन्हें चुनाव जितकर सत्ता की कुर्सी पर बैठना होता है । इसलिए वह यह सब नाटक करते हैं । अपने तथा अपनी पार्टी के हीत के लिए ये लोग नारे लगाने वाले व्यक्तियों का उपयोग करते हैं । अपनी पार्टी का बडे जोरो-शोरों से प्रचार हो । समाज में अपना प्रभाव हो । लोगों के मनपर अपना नाम थोंपने के लिए राजनीति में किराये पर आदमी लेकर नारों का प्रयोग किया जाता है और सत्ता की कुर्सी हथियाने की कोशिश की जाती है ।

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.३७ ।
२ तदैव ,, पृ.८१ ।
३ तदैव ,, पृ.८१ ।

(९) राजनीति एवं चुनावी दाँवपेंच --

राजनीतिक नेता लोगों को चुनाव किसी भी किंमत पर जीतना होता है। इसलिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार होते हैं।वे चुनाव के दरम्यान चुनाव जीतने के लिए अलग अलग दाँवपेंच अपनाते हैं। चुनाव के समय जब पार्टी में आपसी मतभेद बढने लगते है तब अपने लोगों को बडे लाड-प्यार से समझाकर उनका असंतोष दूर करते हैं। पार्टी अंदर से चाहे कितनी भी खोखली हो,उसमें कितने भी मतभेद क्यों न हो फिर भी चुनाव के दिनों में नेता लोग अपनी पार्टी की झूठी एकता दिखाते हैं। अपनी पार्टी में कोई मतभेद नहीं ऐसा दिखाकर हम ही अनुशासन अच्छी तरह से करेंगे। हमें वोट दो ऐसा लोगों को समझाते हैं। जनता से झूठ बोलकर अपनी पार्टी की एकता दिखाते हैं और अपनी पार्टी के लोगों को समझाते हैं कि,...

" कम-से-कम चुनाव तक ये आपसी मतभेद दूर ही रखे जायें तो बेहतर होगा। अध्यक्ष के नाते मैं केवल यही कह सकता हूँ कि इस समय एकजुट होकर हमें चुनाव-अभियान में लग जाना चाहिए।"[१]

नेता लोग चुनाव होने तक अपने बर्ताव में सुधार लाने की कोशिश करते हैं। अपने लोगों को चुनाव होने तक पार्टी के हीत के लिए सहयोग देने को कहते हैं और चुनाव के बाद उनके बारे में विचार किया जायेगा ऐसा आश्वासन देते हैं। ' महाभोज ' में अप्पासाहब लोचन को समझा रहे हैं कि....

" देखो,इस पार्टी को बनाने में तुम्हारा बहुत सहयोग रहा है और मैं जानता हूँ कि इस पार्टी में आस्था है तुम्हारी.... बल्कि कहूँ कि मोह है तुम्हें। अपनी बनायी चीज से होता ही है। इसीलिए कह रहा हूँ कि अपने इस निर्णय को थोडे समय के लिए स्थगित ही रखो। चुनाव के बाद जैसा चाहोगे,वैसा ही होगा।"[२]

वोट प्राप्त करने के लिए राजनीतिक नेता लोग नये-नये तरीके खोजते हैं। चुनाव जीसने के लिए नये-नये चुनाव तंत्रों का उपयोग किया जाता हैं। तरह-तरह की यात्राएँ निकाली जाती है। पदयात्रा,साईकिल रैली जैसी रैलीयाँ निकाली जाती

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.६१।

२ तदैव ,, पृ.६४।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

है। सुकुल बाबू भी ऐसे ही एक नेता है जो अपने लोगों से रैली के आयोजन के बारे में कह रहे है कि ....

" अब एक ऐसी रैली करवा दो जैसी इस प्रान्त के इतिहास में न हुई हो। देखते रह जायें दा साहब भी। पैसा पानी की तरह भी बहाना पडे तो कोई चिन्ता नहीं।" [१]

चुनाव जीतने के लिए रैलियाँ निकाली जाती है। पैसा पानी की तरह बहाया जाता है और वोट प्राप्त करके चुनाव जीतने का प्रयास किया जाता है। राजनीतिक लोग अपना आदमी चुनाव में जीतकर आये इसलिए कभी-कभी विरोधी दल के एकाद आदमी को खरी-खोटी सुनाकर उसे चुनाव में खडा रहने के लिए तैयार करवाते हैं और उसका फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। काशी जोरावर को चुनाव में खडा रहने को तैयार करते है क्योंकि जोरावर चुनाव लडने से जोरावर के जो वोट है वो जोरावर को मिलेंगे और इसका नुकसान दा साहब को पहुँचेगा और फायदा सुकुल बाबू को इस बारे में काशी सुकुल बाबू से कहते है --

" हमने जोरावर को तैयार कर लिया है खडा होने के लिए ,आखिरी दिन अपना नामांकन पत्र भरेगा।" [२]

इस तरह ये नेता चुनाव जीतने के लिए हर एक प्रकार से प्रयत्नशील रहते हैं। ' घरेलू-उद्योग-योजना' जैसी योजना निकालकर उसका राजनीतिक फायदा उठाने की कोशिश की जाती है। भाषणबाजी,नारेबाजी,प्रचारसभाएँ,सरकारी योजनाएँ आदि तरीके चुनाव जीतने के लिए अपनाये जाते हैं। सामान्य जनता पर प्रभाव पडे लोग अपने को गरीबों का हमदर्द समझे इसलिए प्रयत्न किये जाते हैं। ' महाभोज ' में बिसू की हत्या होती है,उसे मारा जाता है लेकिन उसका राजनीतिक फायदा उठाने की कोशिश दा साहब और सुकुल बाबू भी करते हैं। क्योंकि --

" बिसू मर गया,कोई बात नहीं, पर बिसू की मौत का प्रसंग मर गया इस समय,तो वे कैसे जिन्दा रहेंगे ?" [३]

---

१ भण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.९१।

२ तदैव ,, पृ.८९-९०।

३ तदैव पृ.७२।

बिसू की मौत का प्रसंग जिन्दा रखा जाता है। हीरा बिसू का बाप है, एक सामान्य आदमी है। लेकिन चुनावी फायदे के कारण दा साहब और सुकुल बाबू दोनों भी उसके घर पैदल चले जाते हैं।

राजनीतिक नेता अपने लोगों के द्वारा दबाव डालकर वोट प्राप्त करते हैं। तरह-तरह के आश्वासन दिये जाते हैं। किसी को प्रमोशन देने का वादा करते हैं तो किसी नेता को ' वोट बॅन्क' हासिल करने के लिए उसे मंत्रिपद देने का आश्वासन मिलता है। अपनी पार्टी के लोग चुनाव में जीत जाये इसलिए पार्टी के नेता अपना प्रचार दौरा निकालते हैं। लोगों को झूठे आश्वासन देकर ये नेता लोग दिल्ली चले जाते हैं।

आज पंचायत में भी यह चित्र देखने को मिलता है। लोगों को पैसे तथा खाना देकर चुनाव में अपनी पार्टी को वोट देने के लिए कहा जाता है। किसी पर दबाव डाला जाता है। युवकोंको नौकरी के झूठे आश्वासन दिये जाते हैं। किसी भी तरह सत्ता अपने हाथ में लेकर कुर्सी पर बैठने के लिए ये नेतालोग उतावले हो गये हैं। इन्हे जनता की किम्मत नहीं है। ये लोग जनता को खरीद लेते हैं। चुनाव में जनता की कीमत के संदर्भ में कहा है कि, ...

" राजनीतिक स्तर और आदमी के वोट की कीमत को पाँच रुपये पर उतार दिया जाये, बडी शोचनीय स्थिति है यह।" [१]

इस तरह राजनीतिक नेता लोग कभी पैसे देकर, कभी झूठे आश्वासन देकर तो कभी सरकारी योजनाओं का लालच दिखाकर तो कभी किसी प्रसंग को जिन्दा रखकर चुनाव जीतने में कामयाब होते हैं।

१०) राजनीति एवं चापलुसी --

राजनीति में यह बात अधिकतम मात्रा में दिखाई देती है कि राजनीतिक

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१४६-४७।

नेतावों के अपने चापलुसी करनेवाले लोग होते हैं। ये लोग नेताओं को किसी भी प्रकार की मदद करने को तैयार रहते हैं। उनकी हाँ मे हाँ मिलाते रहते हैं। नेता लोगों को महत्वपूर्ण खबरें देते रहते हैं। वे नेता लोगों की चापलुसी करने का एक भी मौका नही छोडते हैं। `महामोज` में दा साहब को पांडेजी सरोहा चुनाव के दरम्यान की सभी खबरे देते हैं। ऐसी ही एक खबर लोचन भैया जो की दा साहब के मन्त्रीमंडल में शिक्षामंत्री है। अब वे दा साहब के विरुध्ध अपना मंत्रीमंडल बनाना चाहते है। राव और चौधरी जैसे हर रोज अपना मालभाव बढाने वाले मंत्रीयों का साथ लेकर दा साहब का मन्त्रीमंडल गिराना चाहते है। यह खबर सुनकर दा साहब पाण्डेजी से चिन्ता मत करो और निश्चिंत रहने के लिए कहते है तब पाण्डेजी तुरंत दा साहब की खुशामत करते हुए कहते हैं कि....

`आपके रहते किसी को भी चिन्ता करने की जरूरत रहती है भला ?`[१]

इसतरह राजनीतिक नेता लोग भी खुशामत करते रहते हैं। अपने स्वार्थ के कारण राव लोचन भैया से कह रहे है कि,

`अब कौन नहीं जानता कि असन्तुष्टों में आपके समर्थकों की संख्या ही सबसे अधिक है ? बागडोर आपके हाथ में रहेगी ... घास-पात कोई दूसरा आयेगा डालने ?`[२] वे आगे जाकर कहते हैं कि ...

`ठिक है,हम तो आपके हुकुम के गुलाम हैं,लोचन भैया। आप ज्ञापन तैयार कीजिए ... हम हस्ताक्षर करेंगे और करवायेंगें।`[३]

राजनीतिक नेता लोग बडे ढोंगी और स्वार्थी होते हैं। हर एक का वे राजनीति के लिए उपयोग करना चाहते हैं। अपना हीत और समाज का अहीत करने में वे मशाहुर होते हैं। दा साहब जनता की आवाज,समझी जाने वाले समाचार पत्र भी खरीद लेते हैं और उन्हें अपनी चापलुसी करने के लिए मजबूर करते हैं। लेकिन उनके कहने का तरीका अलग होता है। दा साहब `मशाल` के संपादक दत्ता बाबू को

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.१४८।

२ तदैव ,, पृ.६७

३ तदैव ,, पृ.६७।

बुलाकार अपनी चापलूसी करने के लिए उन्हे कागज का डबल कोटा तथा विज्ञापन देते हैं। ` मशाल ` के संपादक दत्ता बाबू अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक दिखाई देते हैं फिर भी दा साहब के मतानुसार वे अपने कर्तव्य के प्रति अतिसजग नहीं है क्योंकि वे दा साहब तथा सत्ताधारी पक्ष के खिलाफ भी लिखते हैं। इसलिए दत्ता बाबू को दा साहब समझा रहे हैं कि ....

" आपका इस तरह टिप्पणी करना भी कोई खास शोभनीय नहीं है। आप लोगों ने जो भूमिका अदा की, उसे किन अक्षरों में लिखेंगे आप ? चापलूसी और जी हुजूरी की भूमिका तो नहीं है अखबार - नवीसों की।" १

इस तरह समझा बुझाकर दा साहब जैसे सत्ताधारी पक्ष के नेता ` मशाल ` जैसे अखबार के संपादक दत्ता बाबू को खरीदते हैं और अपनी मनचाही बात छपवाते हैं। राजनीति में राजनीतिक नेताओं के अपने लोग उनकी चापलूसी करते है और उन्हें बढावा देने के लिए नेता लोग उनकी खुशामत करते रहते हैं। ये न टूटने वाली शृंखला हैं। आज भी ऐसे चापलूसी करने वाले लोगों की कमी नहीं है। चापलूसी राजनीति का एक अंग बनी हुयी है।

११) राजनीति एवं अंधविश्वास के शिकार नेता --

समाज में अंधविश्वास रखने या कुप्रथाओं का पालन करनेवाले लोगों की कमी नहीं हैं। अशिक्षित लोग अज्ञान के कारण अपनी पुरानी परंपरा के कारण अंधविश्वास रखते हैं। आज समाज में इन अंधश्रध्दा लोगों को अपने चंगुल में फसाकर अपनी झोली भरने वाले साधु महंतों की कमी नहीं हैं। इन लोगों के पास सीर्फ ज्ञान के कारण जानेवाले अशिक्षित लोग ही नहीं है बल्कि सुशिक्षित ,सुसंस्कृत लोग भी अंधविश्वास के कारण साधु महंतो के पास जाकर गंडा तावीज बाँधकर आते है।

---

१ भण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.४३ ।

राजनीतिक नेता लोग भी इन प्रथाओं का पालन करते है । समाज के सामने नेता लोग कभी कभी मंचपर जाकर कुप्रथाओं,अंधविश्वास जैसे विषयों पर भाषण देते हैं और समाज में इसके कारण कितने दुष्परिणाम होते हैं यह बात लोगों को समझाते हैं । अत: लोगों ने अंधविश्वास,अंधश्रध्दा जैसी बातों में विश्वास नहीं रखना चाहिए ऐसी बातें कहकर चले जाते हैं । लेकिन उनकी कथनी और करनी में फर्क होता है । वास्तव जगत में जब वे आते है तो उनके ये विचार बदल जाते हैं । अपने स्वार्थ की बात आती है,इलेक्शन की हवा चलती है तथा कुर्सी कैसी हथिया ली जाए ऐसी समस्याएँ जब सामने आती है,तब ये नेता लोग कुप्रथाओं,अंधविश्वास जैसे प्रथाओं को अपनाने लगते है । कोई अपने प्रचार का आरंभ ज्योतिषि को पूछकर पंचाग के अनुसार अच्छे दिन से समारंभपूर्वक शुरु करते है तो कोई किसी बाबा का,साधु महाराज का आशीर्वाद लेने जाते हैं । कोई पूजा-अर्चा में लगता है तो कोई नेता देव-देवताओं को पुजारियों से अभिषेक करवाता है और मन्नतें मांगता है । अंधश्रद्धा या ज्योतिष विध्या में नेता लोगों का अनन्त विश्वास होता है ।` महाभोज` में सुकुल बाबू ऐसे ही एक भुतपूर्व मुख्यमन्त्री के रूप में दिखाई देते हैं कि जिनका ज्योतिष पर अनन्त विश्वास है । इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि,

" ज्योतिष पर अनन्त विश्वास है सुकुल बाबू को । तरह-तरह के नग जडी हुई चार बडी अँगूठियाँ पहन रखी हैं । गले और बाजू में गंडे-तावीज भी बँधे हुए मिल जायेंगे । नीलम तो अभी पिछले महीने ही पहना ।" १

नेता लोग अंधश्रद्धा के शिकार बने हुए दिखाई देते हैं । सुकुल बाबू जैसे नेता नीलम जैसे पत्थर श्रद्धा से पहनते हैं । वह इन पत्थरों से डरते भी है क्योंकि उनके विचार से यह पत्थर बडे तेज मिजाज वाले होते हैं माफिक न आये तो एकदम पटडा ही बिठा देते है । लेकिन संयोग से बिसू की मौत जैसा मौका उनके,थाली में परसकर आता है । बिसू की मौत का उन्हें कितना दु:ख हुआ है यह दिखाने के लिए अपने राजकीय स्वार्थ के लिए वह सरोहा जाते हैं । अपना भाषण देने से

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.२९ ।

पहले भी वह नीलम को नमस्कार करते हैं जो उन्होंने अपने उँगली में पहन रखा है। इस तरह नेता लोग नगों-पत्थरों पर कितना विश्वास रखते हैं इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि ...

" मन-ही-मन उन्होंने उँगली में पडे नीलम को नमस्कार किया और ' मत चूके चौहान' के भाव से माइक संभाल लिया।" १

जब येलेक्शन की हवा चलती है तब नेता लोगों की नींद हराम हो जाती है। उन्हें किसी भी किमत पर चुनाव जीतना होता है। उनके सामने चुनाव जीतने या कुर्सी कैसी हथिया ली जाए ऐसी अनेक समस्याएँ उपस्थित होती है। नेता लोग भगवान की शरण में जाते हैं। नेता मंत्र-तंत्र का सहारा किस प्रकार लेते हैं इस संदर्भ में कहा है कि ,...

" उँगली आँखों के सामने लाकर सुकुल बाबू मुग्ध-भाव से नीलम को देखते रहे - बस, अब तेरा ही भरोसा है... तू ही पार लगाना। फिर उठे और सीधे बैठकर जोर-जोर से एक मन्त्र का जाप करने लगे। नींद अच्छी आती है इस जाप से।" २

राजनीतिक नेता लोग अपने को समाज का,आम जनता का नेता समझाते हैं। लेकिन ये नेता लोग अंधश्रद्धाओं और कुप्रथाओं को स्वीकार करते हैं। तब मन में विचार आने लगता है कि, ऐसे नेता गरीब जनता का विकास कैसा करेंगे ? कैसे इन लोगों की पुरानी रूढीयाँ पुराने विचारों को हटाकर आधुनिक तथा सही विचारों पर चलने के लिए तैयार करेंगे। राजनीतिक नेता लोगों का अनुकरण समाज भी करता हुआ दिखाई देता है। सही दिशादर्शक,मार्गदर्शक के अभाव के कारण आज भी समाज में अंधश्रद्धा तथा कुप्रथाओं का प्रचलन जारी है।

१२) राजनीति एवं शासन सत्ता --

राजनीतिक नेता लोग जब चुनाव में जीतकर सत्ता हासील करते हैं तो उनको

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.३३।

२ तदैव ,, पृ.४०।

समाज,जनता की ओर देखने की फुर्सत नहीं मिलती है । लेकिन पाँच वर्ष के बाद फिर चुनाव का समय आता है तब इन सत्ताधारी नेताओं की आँखें खुलती है और वे जनता को अपनी तरफ करने चुनाव जीतने की कोशिश में लगे रहते हैं । समाचार पत्र अपनी प्रशंसा करे इसलिए समाचार पत्रों को अपनी तरफ कर देते हैं । महामोज में सत्ताधारी पक्षा के दा साहब चाहते है कि दत्ता बाबू उनके 'मशाल' नामक अखबार में अपनी प्रशंसा के पुल बाँधे और दूसरी तरीके से वे यह बात मनवा भी लेते हैं किंतु दूसरे ढंग बोलने के तरिके के बारेमें लेखिका ने कहा है कि,....

" मैं तो माई कबीर के दोहे का कायल हूँ कि 'निन्दक नियरे राखिये ।' प्रशंसक से निन्दक ज्यादा हितैषी होता है हमेशा । आपको सत्पथ पर रखता है । आदमी एक बार इस गुर को समझ ले तो हमेशा के लिए भटकने से बच जाये । पर स्वभाव है आदमी का - प्रशंसा ही अच्छी लगती है उसे ।" [१]

लेकिन उनकी कथनी और करनी में फर्क होता है । दा साहब दत्ता बाबू को अपने घर बुलाकर उसे समझाते है, कागज का डबल कोटा तथा विज्ञापन देते हैं,और 'मशाल' में अपनी मनचाही बात छपवाते हैं । ये सत्ताधारी पक्षा की राजनीति है ।

सत्ताधारी पक्षा चुनाव जीतने के लिए विरोधी दल पर किचड उछालते है । ताकी विरोधी पक्षा के प्रति लोगों में आदरभाव न रहे और लोग अपने पक्षा के प्रति आदरभाव रखे । सत्ताधारी पक्षा के नेता विरोधी पक्षा पर टिका-टिपणी करते हैं और हमने ये किया,वो किया और हम ये करेंगे, ये करनेवाले है आदी बाते कहते रहते हैं । सत्ताधारी पक्षा के नेता दा साहब ऐसी ही एक बात 'मशाल' के संपादक दत्ता बाबू से कह रहे है कि..

" पिछली सरकार ने कुछ अखबारों को विज्ञापन न देने का आदेश दे रखा था सरकारी महकमों में । सही बात कहने का साहस दिखलाया था इन अखबारों ने । उसी की सजा थी यह शायद पर भाई मेरे, साहस को तो पुरस्कृत होना चाहिए । मैंने वे सारी पाबन्दियाँ हटा दी है ।" [२]

---

१ मण्डारी मन्नू - महामोज - पृ.४४

२ तदैव ,, पृ.४८ ।

राजनीतिक नेता बोलने में बड़े माहीर होते हैं। अपने स्वार्थ के लिए ये नेता विरोधी दल के नेताओं पर किचड उछालते है। `सरोहा` में बिसू की मौत होती है, उसकी हत्या की जाती है। उसका जवाब पूछा जाता है लेकिन हत्या का जवाब देने की अपेक्षा दा साहब लोगों को ही सवाल पूछते है कि ....

" सुकुल बाबू आप लोगों के पास हमदर्दी जताने और बिसू की मौत का हिसाब लेने आये थे। पूछा नहीं आप लोगों ने कि क्यों साहब, आपके राज में बिना कोई कारण बताये .... बिना मुकदमा चलाये इस बिसेसर को जेल में क्यों डाल दिया था ?" [१]

सत्ताधारी पक्ष के नेता विरोधी पक्ष को ऐसी घटनाओं को जबाबदार ठहराते हैं, दोषी ठहराते हैं। लेकिन वास्तव में इन लोगों के ही गुंडों ने बिसू जैसे आदमियों हत्या की है। अपने भाषण में अन्याय और अत्याचार हम नहीं करेंगे, सब लोगों को समान अधिकार देंगे ऐसी बातें कहते हैं लेकिन वास्तव जगत में बिलकुल उसके विपरीत होता है। अन्याय और अत्याचार होते रहते हैं। अमीर, जमींदार लोग गरीब मजदूरोंका शोषण करते हैं। ये बाते मालुम होते हुए भी सत्ताधारी पक्ष इन लोगों के वोट और पैसे इन दोनों के लिए इनके काले कारनामों की ओर जानबुझकर दुर्लक्ष करते हैं।

राजनीति में वोट प्राप्त करने के लिए नेता लोग कुछ भी करते हैं। जनता में अपना आदरभाव रखने के लिए वह हिरा जैसे सामान्य व्यक्ति के हाथ से `घरेलू` उद्योग योजना` का उद्घाटन करवाते हैं और दिखाना चाहते है कि वह गरिबों को कितना मान सम्मान देते है। दा साहब लोगों से कहते हैं कि....

" इस योजना के उद्घाटन के लिए बिसेसर के बाबा से अधिक सही आदमी और कौन हो सकता है। [२]

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.७८।

२ तदैव ,, पृ.८०।

राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ के लिए वोटों के लिए ऐसी योजनाएँ निकालते हैं। लेकिन इन योजनाओंका फायदा इनके लोगों को ही होता रहता है। राजनीति में पहले भी और आज भी` घरेलू उद्योग योजना जैसी योजनाएँ निकली हुयी है -- गरीबी हटाव योजना,संजय गाँधी निराधार योजना,रोजगार हमी योजना,जवाहर रोजगार योजना, इंदिरा आवास योजना। लेकिन इन योजनाओं का लाभ किसे मिला ये सवाल आजतक लोगों के सामने प्रश्नचिन्ह के रूप में खड़े हैं।

राजनीतिक नेता ऐसी योजनाएँ और इन योजनाओं का उद्घाटन किसी गरीब आदमी से करवाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करते हुए दिखाई देते हैं।

सत्ताधारी पक्ष आज भी झूठे आश्वासन देकर सत्ता कायम रखने में कामयाब होते हैं। आज दिन-ब-दिन मँहगाई,बेरोजगारी बढती जा रही है। कोई भी उसे रोक नहीं पाता हैं। अन्याय और अत्याचार होते रहे हैं। राजनीति में गुंडों को स्थान मिला है। चुनाव के दौरान मँहगाई और बेकारी कम करने का आश्वासन नेता लोग देते हैं। लेकिन आज ये स्थिति है कि किसी भी पक्ष को सत्ता पर आने से या सत्ता हासील करने से मँहगाई और बेकारी कम करने का श्रेय प्राप्त नहीं होगा।

१३) राजनीति एवं विरोधी दल --

राजनीतिक नेता कभी भी सत्ता से बचे रहे ये तो कभी हो ही नहीं सकता। राजनीतिक नेता लोगों की कुर्सी के बिना नींद ही नहीं आती। हरदम वे सत्ता पाने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। सत्ता के लिए वह कुछ भी करने को तैयार होते हैं। चुनाव के दौरान भाषण देने गाँव-गाँव जाते हैं। लोगों को झूठे आश्वासन देना इनका नीजी कार्यक्रम है।` झूठ बोलो और चुनाव जीतो `यह इन लोगों का सिद्धान्त बन गया है। सत्ताधारी पक्ष और विरोधी पक्ष में कोई अन्तर ही नहीं रह गया है। दोनों भी जनता की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति करने में असमर्थ है। सिर्फ अपनी आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल हुए है। चुनाव

जीतने के लिए विरोधी पक्ष सत्ताधारी पक्ष पर किचड उछालते रहते हैं। सत्ताधारी पक्ष के गुण के अलावा दोष जनता के सामने प्रकट करते रहते हैं। महाभोज में विरोधी पक्ष के नेता सुकुल बाबू सत्ताधारी पक्ष पर कीचड उछल रहे है, टीका-टिपण्णी कर रहे है कि ...

" क्या दोष था इन हरिजनों का ? यही न कि सरकारी रेट पर मजदूरी माँग रहे थे ? गुनाह था यह ? पर शायद था - तभी तो जिन्दा जला दिये गये और जिन्होंने जलाया, उन पर कोई उँगली उठाने वाला तक नहीं। बेचारे बिसू ने उँगली उठाने की कोशिश की तो हमेशा के लिए चुप कर दिया गया उसे।" [१]

बिलकुल इसी तरह सत्ताधारी लोगों के शासन में आपको कभी न्याय नहीं मिलने का ऐसा सुकुल बाबू का कहना है। वे लोगों से कह रहे है कि....

" जहाँ सच का ही गला दबता हो, वहाँ न्याय की उम्मीद की जा सकती है ? भूल जाइये कि आपको कभी न्याय मिलेगा ?" [२]

चुनाव के दौरान नेता लोगों को चुनाव के सिवा कुछ सुझाता ही नहीं है। हर किसी भी किमत पर उन्हे चुनाव जीतना होता है। जनता को अपनी बात मानने के लिए प्रयत्न करते हैं। सत्ताधारी पार्टी की निष्क्रीयता लोगों के सामने प्रकट करते हैं। सुकुल बाबू सत्ताधारी पार्टी के बारे में लोगों को चेतावनी दे रहे है कि ...

" गाँठ बाँध लीजिये कि यह सरकार आप लोगों के लिए कुछ नहीं करने जा रही। उसे लगाव आपसे नहीं, अपनी कुर्सियों से है।" [३]

नेता लोग जब अपनी सत्ता विरोधी दल के हाथ में चली जाती है तब वे अपनी वैषम्य भावना स्पष्ट शब्दों में प्रकट तो नहीं कर सकते ऐसे समय दूसरे तरीके से उनपर कीचड उछालने की कोशिश करते हैं। सत्ताधारी पक्ष पर वे टीका टिपण्णी करते हैं। सुकुल बाबू सत्ताधारी पक्ष के बारे में अपने मन में छिपी हुई वैषम्य की भावना

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.३३-३४।
२ तदैव ,, पृ.३४।
३ तदैव ,, पृ.३५।

प्रकट करते हुए कहते हैं कि,...

" चुनाव जीतने के लिए सारा जोर लगा दिया है सरकार ने। पर मैं पूछता हूँ कि क्यों ? मैं तो हारा हुआ आदमी हूँ - मुझसे भला कैसा डर ? अरे जनता ने भरोसा करके आपको कुर्सी पर बिठाया और कुर्सी पर बैठकर आपने जो कुछ किया जनता के हित में ही किया होगा... फिर डर काहे का ? कहि सफेद में काला और काले में सफेद करने में लगे हो।" [१]

चुनाव के दौरान सत्ताधारी और विरोधी दल के बीच हमेशा मुठभेड होती रहती है। दोनों एक-दुसरे की बदनामी करने लगते है। बिसेसर की हत्या के बारे में यह सरकार नाटक कर रही है और चुनाव जीतने के लिये यह सारा मामला जिंदा रख रही है ऐसा मत सुकुल बाबू का है। सुकुल बाबू सत्ताधारी पार्टी किसतरह निष्क्रिय हो चुकी है यह बात बढा-चढाकर लोगों को बता रहे है कि....

" बयान लेने का नाटक तो हो ही गया और इस बार बहुत मुस्तैदी से भी हुआ। अब मामला गहरी छानबीन के लिए उँचे अफसरों के हाथ में सौप दिया जायेगा जो कभी किसी नतीजे पर पहुँचेंगे ही नहीं। कम-से-कम चुनाव तक तो नहीं पहुँचेंगे। आप लोग मरे या जिये, इन्हे तो चुनाव जीतना है हर हालत में। और चुनाव जीतने के लिए गाँव के धनी किसानों के वोट भी चाहिए और पैसा भी। इसलिए अभी उनकी हर ज्यादती पर, हर अन्याय पर परदा डाला जायेगा.... उन्हे बचाया जायेगा। इसलिए अच्छी तरह जान लीजिये कि इस हत्या के लिए कुछ नहीं होने जा रहा है। कौन करेगा ? पंचायत इनकी ... पुलिस इनकी और अब तो विश्वास हो गया होगा आपको कि सरकार भी इन्ही की हैं। तब कौन लडेगा आपकी लडाई... आपको न्याय दिलाने के लिए.... आपका हक दिलाने के लिए कौन आयेगा ? [२]

लेकिन ये सब भाषणबाजी चुनाव तक और चुनाव जीतने के लिए होती है। इन लोगों को वोटों की जरुरत होती है और इसके लिए वह प्रयत्न करते रहते हैं।

---

१ भण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.३५।

२ तदैव ,, पृ.३४।

सुकुल बाबू इस संदर्भ में कहते हैं कि ...

"अब खेत मजदूरों और हरिजनों को अपनी तरफ करने का काम जोर-शोर से करो । योजना का पैसा सरकार से ले और वोट हमको दे । पिछले चुनाव में जैसा हमारे साथ हुआ, ठीक वैसा ही दा साहब को करवा दो इस बार ।" १

इस तरह विरोधी पक्ष सत्ताधारी पक्ष पर किचड उछालकर, जनता को झूठे आश्वासन देकर चुनाव जीतने कि कोशिश करते हैं । चुनाव के लिए यह सब नाटक किये जाते है । जनता की भलाई की ओर किसी का भी ध्यान नहीं है । इन लोगों का सिर्फ अपने पर ध्यान टिका हुआ है । आज भी विरोधी पक्ष सत्ताधारी पक्ष पर किचड उछाल रहा है । सत्ता हासिल करने के लिए नये नये हथकंडे अपनाये जा रहे है । कभी जात की दिवारें बनाकर तो कभी वर्ग की दिवारें बनाकर सत्ता की कुर्सी हथियाने की कोशिश की जा रही है । सत्ताधारी पक्ष को गिराने के लिए मध्यावधि चुनाव की माँग की जा रही है । किसी भी तरह सत्ता की कुर्सी पर बैठने के लिए विरोधी दल के नेता उतावले हो गये हैं।

(१४) राजनीति एवं सत्तापरिवर्तन (आशा - निराशा) --

राजनीति में सत्तापरिवर्तन होता रहता है । चुनाव में हारे हुए नेता सत्ता की कुर्सी कायम रखने की कोशिश करते हैं तो चुनाव में जीतकर गये हुए नेता सत्ता की कुर्सी कायम रखने की कोशिश करने में लगे रहते हैं । इन दोनों की मुठभेड का सामना आम जनता को करना पडता है । सत्ता परिवर्तन होने से या सत्ताधारी पक्ष कायम रहने से जनता में कोई फर्क नहीं पडता । सब नेता एक जैसे होते हैं । जान बुझकर जनता की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है । कभी न खत्म होने वाला झूठे आश्वासन और भाषणबाजी का क्रम जारी है । ये नेता, लोग चुनाव के दरम्यान जनता के सामने आते हैं, उनसे मिलते हैं । लेकिन अपने स्वार्थ की बात हो जाने पर ऐशोआराम की जिन्दगी बिताते रहते हैं । अपने स्वार्थ के लिए किसी एक घटना

१ भण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.९०-९१ ।

को जिन्दा रखकर उसे प्रचार का माध्यम बनाया जाता है । ` महाभोज ` में दा साह्ब जैसे स्वार्थी नेता के संरक्षण में पला, राजकीय आश्रय लेने वाला जोरावर जैसा गुंडा बेगुनाह, मासुम बिसेसर की हत्या करता है । गुनहगार होते हुए भी जोरावर खुलेआम दनदनाता फिरता है ।

जनता जान गयी है कि सत्ता परिवर्तन होने से कुछ नहीं होने वाला है । समाज में जैसी स्थिति है वैसी ही रहने वाली है । शोषण, अन्याय और अत्याचार कभी खत्म नहीं होने वाले हैं । महाभोज में बिसू की हत्या के बाद उसका राजनीतिक फायदा उठाने की कोशिश में सुकुल बाबू लगे हैं । लेकिन जब वे सत्ता पर थे तब किसी भी प्रकार का जुल्म किये बिना बेगुनाह, निर्दोष बिसू को चार साल जेल में बंद किया गया था और उसे ऐसी यातनायें दी थी कि शैतान भी काँप उठे । दा साह्ब भी ऐसे ही स्वार्थी नेता हैं कि उनके शासन काल में बिसू की हत्या हो जाती है । दिन दहाडे जिते जागते जिन्दा आदमियों को जला दिया जाता है और राजनीति के महाभोज उडाये जाते हैं ।

जनता जान गयी है कि समाज में क्रान्तिकारी बदल जब तक स्वार्थी नेताओं - की स्वार्थी राजनीति खत्म नहीं होगी तब तक असंभव है । क्योंकि कोई पक्ष सत्ता पर आयें उन्हें सत्ता की कुर्सी ही अच्छी लगती है । कोई इनाम धरम नहीं रहा है । राजनीति स्वार्थनीति बन गई है । आगजनी बलात्कार, हत्या ऐसी घटनायें उनके लिए साधारण हो गयी है । लोकमंगल राज की अपेक्षा समाज में गुंडाराज दिखाई दे रहा है । समाज में आतंक छाया हुआ है । प्रशासन में हस्तक्षेप, पुलिस में हस्तक्षेप के कारण गुंडे दनदनाते घुमते नजर आते हैं और बेगुनाह लोग जेल में बंद किये जाते हैं । इस तरह की सारी व्यवस्था को आम जनता सह रही है । इसलिए काफि निराशा छायी हुयी है । ऐसा अँधकार छाया हुआ है की प्रकाश का कोई भी किरण दिखाई नहीं दे रहा है । जनता की नाराजगी और आम जनता की दयनीय स्थिति का वर्णन बिन्दा की तरफ से दिखाई देते है कि...,

` तीस साल से आप लोगों की बाते ही तो सुनते - समझते आ रहे हैं । क्या हुआ आज तक ? पेट भरने के लिए अन्न नही, आपकी बातें ... खाली बातें...

जैसे सुकुल बाबू तैसे आप ।" [१]

गरीब, मजदूर किसानों की स्थिति, बेकारी, अशिक्षित समाज का करुण चित्रण समाज में दिखाई देता है । दिन-ब-दिन अन्याय और अत्याचार बढ रहे हैं । समाज में जैसे थी स्थिति दिखाई देती है । लोगों को मालुम है कि झूठे आश्वासन देकर ये नेता लोग चुनाव जीतकर जाते हैं । ये समाज के लिए गरीब जनता के लिए कुछ नहीं करने वाले हैं । इसलिए सत्तापरिवर्तन होने से या वहीं सत्ता में रहने से कोई फर्क नहीं पडने वाला है । सब एक जैसे होते हैं इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि...

" हमने तो सबको देख लिया साहब, एक वह शराबी सरकार थी, एक यह पिशाची सरकार ... सबुरे सब एक... से ।" [२]

(१५) राजनीति एवं प्रचार माध्यम --

राजनीतिक लोग चुनाव के दरम्यान जनता के सामने आते हैं । वे पाँच साल बाद फिर एक बार इलेक्शन जीतने के लिए सारा जोर लगाते हैं । अपना तथा अपनी पार्टी का प्रचार जोर शोर से करने लगते हैं । नेता लोग प्रचार करने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाते हैं । प्रचार करने के लिए विविध साधनों का उपयोग किया जाता है । विधानसभा की एक सीट के उप-चुनाव में भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुकुल बाबू खुद खडे रहे हैं । वे अपना प्रचार बडे जोर से कर रहे हैं । गाँव सरोहा में कुसुल बाबू भाषण देने जाते हैं । भाषण देने से पहले उनके लोग भोंपू-लगी जीप गाँव में घुमा रहे हैं उस समय वे लोगों से कहते है कि,,

" आज शाम ७: बजे हरिजन भाइयों के हमदर्द दोस्त श्री सुकुल बाबू आप लोगों से बातचीत करने आयेंगे । बिसेसर की मौत सरासर जुलुम है, इसे बरदाश्त नहीं किया जायेगा । आइये और सुकुल बाबू की आवाज में आवाज मिलाकर बिसू की मौत का जवाब तलब कीजिये । शाम ७: बजे... ।" [३]

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.७९ ।
२ तदैव ,, पृ.१३७ ।
३ तदैव ,, पृ.३२ ।

राजनीतिक नेता लोग बडे स्वार्थी होते हैं । `महाभोज` में `बिसू की मौत` हत्या का मामला चुनाव न होता तो एक मामूली या अनजान घटना हो जाती लेकिन चुनाव के कारण बिसू की मौत को भी प्रचार का एक माध्यम बनाया गया है । उसकी हत्या को मरसक जिंदा रखने का प्रयास किया जा रहा है ताकी हरिजनों के वोट अपने को मिल जाय ।

नेता लोग चुनाव के दरम्यान कोई योजना निकलवाते है और उसका फायदा चुनाव जीसने के लिये किया जाता है । सत्ताधारी पक्ष के नेता दा साहब ने ऐसी ही एक योजना `घरेल-उद्योग-योजना` निकाली है । उस योजना के प्रचार के संदर्भ में कहा है कि,`...

" घरेल उद्योग योजना का प्रचार पूरे जोर-शोर के साथ हो रहा है । हमारे लोग घर-घर जाकर समझा रहे हैं और फार्म भरवा रहे हैं ।" [१]

चुनाव में योजना निकलवा कर वोट प्राप्त करने की कोशिश की जाती है । उसी तरह इस योजना का कितना फायदा होगा साथ-ही साथ येह योजना कैसी होगी इसका सचित्र ब्योरा दिया जाता है । पोस्टरें निकाली जाती है और उस पर नेता लोगों की तस्वीर भी छपी जाती है । पोस्टरें घर-घर की दीवारों पर चिपका कर प्रचार किया जाता है । इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि,...

" दूसरे दिन सवेरे से ही गली-गली और घर-घर की दीवारों पर घरेलू-उद्योग योजना के पोस्टर चिपकने लगे और शाम तक यह स्थिति हो गयी कि जिधर नजर उठाओ मुसकराते हुए दा साहब और नीचे योजना की रूपरेखा ।" [२]

चुनाव जीतने के लिए नेता लोग नये नये चुनाव तंत्रों का उपयोग करते हैं । तरह-तरह की यात्राएँ निकाली जाती हैं । पद यात्रा, साईकिल रैली जैसी रैलीयाँ निकाली जाती हैं । `महाभोज` में सुकुल बाबू अपने लोगों से रैली के बारे में कह रहे हैं कि.,...

---

१ मण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.७१ ।

२ तदैव ,, पृ.७२ ।

" अब एक ऐसी रैली करवा दो जैसी इस प्रान्त के इतिहास में न हुई हो। देखते रह जायें दा साहब भी। पैसा पानी की तरह भी बहाना पड़े तो कोई चिन्ता नहीं।" [१]

इस तरह की रैलीयाँ निकाली जाती है और प्रचार किया जाता है। ऐसी रैलीयों को यशस्वी करने के लिए लोगों को पैसे दिये जाते है। ताकी लोग रैली में आये और अपने वोट दें। रैली में लोगों की संख्या बढे और इसका फायदा चुनाव में हो जाय इसलिए गरीब लोगों को पैसे देकर खाना देकर खरीद लिया जाता है। और पैसे की खातिर गरीब लोग मजबूर होकर अपना व्यक्तिगत स्वातंत्र्य तक बेच देते है इस संदर्भ में लेखिका ने कहा है कि,

" दो समय का खाना और पाँच रुपया प्रति व्यक्ति तय हुआ है। बच्चों के लिए भी दो-दो रुपये दिये जायेंगे।" [२]

इस तरह आज भी कोई योजना निकालकर, रैलीयाँ निकालकर चुनाव में प्रचार का माध्यम बनाया जाता है और सत्ता की कुर्सी हथियाने की कोशिश की जाती है।

१६) महाभोज एवं समकालीन राजनीति --

सन १९६० के पश्चात राजनीतिक विषयों पर जो प्रमुख उपन्यास लिखे गये उनमें मन्नूजी का उपन्यास विशेष उल्लेखनीय है। मन्नूजी की 'अलगाव' कहानी राजनीतिक पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कहानी है और इसी कहानी ने आगे चलकर 'महाभोज' नामक उपन्यास का रूप धारण कर लिया आगे चलकर इसी का ही नाटय रूपांतर भी हुआ है।

मन्नूजी का 'महाभोज' उपन्यास शतांश रूप से समकालीन राजनीतिक

---

१ भण्डारी मन्नू - महाभोज - पृ.९१।

२ तदैव ,, पृ.१४६।

वातावरण का चित्र उपस्थित करता है । उस समय में राजनीति का स्वरूप इतना बीभत्स एवं घृणामय हो गया था कि उसमें मानव- मूल्यों और मानव-जीवन का कोई महत्व ही नहीं था । ` महाभोज ` का राजनीतिक परिवेश तो अत्यन्त भ्रष्ट, घीनौना और लज्जित करनेवाला है । देवतुल्य राजनेताओं के बीच कुर्सी की लड़ाइयाँ हो रही थी । ज्योतिषियों का महत्व आदि विविध प्रकार के अंधविश्वास नेताओं और राजनेताओं के व्यक्तित्व के अंग बन गए थे । इतना ही नहीं राजनीति में जो भ्रष्टाचार दिखावा, शोषण ,भाई-भतिजावाद, मूल्यों का पतन, नैतिक पतन, गाली-गलौज, गुण्डागर्दी ,हत्या आदि बातें सरेआम हो रही थीं । वोटों के लिए राजनीति, लड़ाने-भिड़ाने वाले को सफेद का काला करने की राजनीति जारों पर थीं ।

` महाभोज ` उपन्यास में मन्नूजी ने युग जीवन का चित्रण किया है । युग जीवन का चित्रण करना मन्नूजी के कथा साहित्य की खास विशेषता रही है । ` महाभोज ` में समकालिन राजनीति का चित्रण किस प्रकार हुआ है इसका उदाहरण प्रा.किशोर गिरडकर ने अपने ` मन्नू भंडारी का कथा साहित्य ` पुस्तक में दिया है वे लिखते हैं कि ,...

` सन १९७५ के लगभग श्रीमती इन्दिरा गांधी के शासन काल में देश में आपात कालीन स्थिति ` लागू कर दी गई थी । आपात कालीन स्थिति के दौरान जनसाधारण पर अनेक अत्याचार हुए, निरपराध लोगों को जेलों में ठुंस दिया गया, समाचार पत्रों पर बंदी लगा दी गई । तद्नंतर आपातकालीन स्थिति के बाद ` जनता लहर ` ने जनता पार्टी को सत्ता सौंपी । आपात काल के बाद आम चुनाव का परिणाम ऐसे तुफान के रूप में सामने आये, कि बड़े-बड़े नेता धाराशायी हो गये । उसके बाद जनता पार्टी के शासन में मनमाना भ्रष्टाचार समाज में व्याप्त हो गया । नैतिक अनैतिक हथकंडे अपनाये जाने लगे । मैत्री पद के भावभाव सरे आम होने लगे । दल बदलुओं का बाजार गर्म हो गया । कुर्सी के लिए सभी एक दूसरे के पैर खींचने लगे । ` किसान रैली ` जैसी रैलियाँ आयोजित की जाने लगीं । इस सारी स्थिति का चित्र मन्नूजी ने ` महाभोज ` उपन्यास में किया है ।` [१]

---

१ गिरडकर किशोर - मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य - पृ.२८ ।

निष्कर्ष --

कूल-मिलाकर यह कहा जा सकता है कि ` महाभोज ` आज की राजनीति में आयी हुई मूल्यहीनता के साथ पूँजीवाद ने आज की आम-व्यवस्था को किस प्रकार भ्रष्ट और दूषित बना दिया है । लेखिका मन्नूजी ने इसी राजनीतिक व्यवस्था का चित्रण किया है ।` डॉ.गोपाल राय का मत है कि ` महाभोज ` में आज की राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार,अनैतिकताएँ, तिकडमबाजी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है । आज की राजनीति में धन,गुण्डा-गर्दी और छल-प्रपंच का प्राधान्य हो गया है । उपन्यास लेखिका राजनीतिक जीवन का अनुभव उसका निजी भोगा या उसके बीच में गुजरा अनुभव न भी हो, उसने उसे इस कौशल्य से प्रस्तुत किया है कि,उसमें कहीं भी अविश्वसनीयता नही नजर आती है । श्री बुलाकी शर्मा ने भी अपना मत प्रकट करते हुए कहा है कि मन्नू भण्डारी अपने पात्रों के अन्तर्संसार को अभिव्यक्त करने में मोहक एवं लुभावनी शैली का सहारा लेती है ।` [१]

वस्तुत: ये सारी बातें समस्याएँ नहीं है, केवल स्थितियाँ है जो समग्र रूप से समाज के सामने,राष्ट्र के सामने ऐसे भयानक परिणामों को जन्म देती है, कि उनका निदान प्राप्त करना असंभव हो जाता है ।और इन सारी स्थितियों के उपचार की आवश्यकता जब समाज अनुभव करता है,तब ये विकट समस्या का रूप ग्रहण कर लेती हैं ।

स्वतंत्रता के साथ ही बाह्य रूप से भले ही परतंत्रता की बेडियाँ टूटी बिखरी हो,आंतरिक रूप से भारत एक प्रकार से गुलाम ही बना रहा । अंग्रेजों के स्थानपर भारतीय शासक बने । लेकिन सत्य यह है कि उनकी कुर्सियाँ वही रही जमींदार, गुण्डे ,अमीर लोग एक प्रकार के बेताज बादशाह बन गये । जनता गरीब होती गई ,और उनके प्रतिनिधि अमीर होते गए । आज स्वन्तत्रता के बाद भी इसमें कुछ परिवर्तन नहीं हुआ ।

---

१ जिस्सा कृष्णकुमार - साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना - पृ.३५-३६ ।

पिछले दो दशको में हमारे देश में सत्ता की राजनीति को बहुत महत्व प्राप्त हुआ है। सच तो यह है कि हमारी राजनीति सत्ता की राजनीति बन गई है। आज के नेता जो अपना कर्तव्य भूल गए हैं। चुनाव के पूर्व के उनके आश्वासन एवं पद प्राप्ति के पश्चात के कार्यों में दूरगामी पार्थक्य परिलक्षित होता है। नेता लोग कहते कुछ है और करते कुछ है। तोडिए-जोडिए और सत्ता को भोगिए, पर उनका दृढ विश्वास होता है।

दलों के दलदल एवं भ्रष्ट राजनीति पर भी उपन्यास लेखिका मन्नू भंडारी ने अपने विचार दिये हैं। लोकतांत्रिक कहे जानेवाले इस देश में सत्ता का गुणगान हर जगह हो रहा है। जनता का आवाज समझे जाने वाले समाचार पत्र भी इससे अछूते नहीं है। समाज में अस्थिरता,भय,आतंक,भूख,अनास्था आदि के स्वर गूंज रहे हैं।